है । जो इस बात को प्रमाणित करती है कि रोड़ हरियाणा में बहुत लम्बे समय से आबाद है ।

3.17 सन् 1180 ई० से 1192 ई० तक पृथ्वी राज चौहान का शासन काल रहा ।

3.18 एक प्राचीन गन्थ आल्हाखण्ड के पृ० 1 से 22 सिरसागढ़ की लड़ाई का विस्तृत वर्णन किया गया है । जो आल्हा-उद्धल-मलखान व पृथ्वी राज चौहान के मध्य हुई थी । जब पृथ्वी राज चौहान के लड़के ताहर ने यह कहकर कि हेमलखान तुम्हारी और हमारी जाति आपस में मेल नहीं खाती अपनी बहन पृथ्वी राज चौहान की पुत्री बेला का रिस्ता मोहबे के मलखान से करने से इनकार कर दिया । महोबे वाले जबरदस्ती बेला को उठाना चाहते थे । दोनों सेनाओं में घमासान लड़ाई हुई । लाखों वीर लड़ाई में शहीद हुए । इस लड़ाई में बड़ी मात्रा में रोड़ वीर शहीद हुए । रोड़ों की आबादी कम होने का यह भी मुख्य कारण रहा है ।

सिरसा जिले में रोड़ वंश का लोहम गौत्र था । जो 1550 ई० को विश्नोई मत से शामिल हो गए । विश्नोईयों में लोहम रोड़ के नाम से जाने जाते हैं । जो विनोईयों का एक गौत्र है । जिला सिरसा एलनाबाद में मनसा रोड़ व रेलवे रोड एलना बाद में कृष्ण कुमार रोड़ इसके जीवित उदाहरण है कि पहले सिरसा जिले में रोड़ आबाद थे ।

3.19 पृथ्वी राज चौहान ने कुमाऊँ के राजा कुमोदमणी व राजा विजय पाल को हराया । समुद्र शिखर के राजा विजयपाल की लड़की पदमावती से 1182 ई० में शादी की थी ।

3.20 समर सिंह रोड़ सेनापति-सर्वखाप पंचायत मुजफ्फरनगर में 1183 ई० में हरिद्वार में एक सभा का आयोजन किया, जिसमें आक्रमणकारियों से भारत की रक्षा का निर्णय लिया गया । पृथ्वी राज चौहान के बहनोई शमर सिंह रोड़ सेनापति की अध्यक्षता में 18000 मल्ल योद्धाओं की सेना एकत्रित कर-कर तरावड़ी के मैदान की तरफ प्रस्थान किया । शहाबुद्दीन की हार हुई ।

3.21 जीत सिंह 1187 ई० में कल्याण गौत्र के जीत सिंह रोड़ को पृथ्वी राज चौहान द्वारा हरियाणा क्षेत्र में जागीर देने का वर्णन है ।

3.22 संयोगिता से विवाह 1191 ई० जयचन्द की पुत्री संयोगिता पृथ्वी राज चौहान की वीरता की गाथायें सुन कर इतनी प्रभावित हुई कि उसने पृथ्वी राज चौहान को अपना वर स्वीकार कर लिया। लेकिन जयचन्द जो पृथ्वी राज चौहान को गैर जाति का होने के कारण उसे विवाह स्वयम्बर पर बुलाना नहीं चाहता था । राजपूत राजाओं को खुश करने की नियत से पृथ्वी राज चौहान का बुत बना कर डयोडी पर रख दिया था, संयोगिता ने बुत के गले में ही वरमाला पहना दी थी ।

जब पृथ्वी राज चौहान को इस अपमान का समाचार मिला । वह इस अपमान का बदला लेने के लिए कन्नौज पर हमला कर संयोगिता को जबरन उठाने का वचन लिया । संयोगिता को चुपचाप लेकर वह नहीं आयेगा । बल्कि दहेज के रूप में जयचन्द से लड़ाई करना चाहेगा । यही कारण था जयचन्द की लडकी संयोगिता को उठा कर शादी करने का 2500 रोड़ सैनिक शहीद हुए । सेनापति सागर सिंह रोड़ विजय सिंह रोड़ व समर सिंह रोड़ शहीद हुए ।

3.23 रोड़ वंश के पाँच सेनापति 1191 ई० को गोरी ने भारत पर हमला बोल दिया । कुछ देशद्रोही भारतीय राजाओं ने शत्रु का साथ दिया। पृथ्वी राज चौहान की सेना में अनेक योद्धा एवं सेनापति इस प्रकार थे । महा सेनापति समर सिंह रोड़ जो पृथ्वी राज चौहान का बहनोई था । मण्डलीक बीर सिंह महला रोड़

गांव मुहाणा, सागर सिंह महला रोड़ गांव मुहाणा, भूप सिंह महला रोड़ गांव मुहाणा, देवत राय महला रोड़ गांव मुहाणा, नर सिंह दाहीमा, चन्द्र पुण्डीरक, सारंग सोलंकी गुजरात का माल चन्देल, हरि सिंह चौहान आदि सहायक सेनापति थे ।

3.24 तरावड़ी के मैदान में 1191ई. को पृथ्वी राज चौहान की हार हुई थी कन्नौज के राजकुमार जयचन्द ने उत्सव और रंगरलियां मनानी शुरू कर दी ।

3.25 पृथ्वी राज चौहान ने हिन्दुओं का आखिरी युद्व पानीपत के मैदान में तरावड़ी 1191ई. में लड़ा था ।

3.26 तरावड़ी की लड़ाई-1191 ई. को दिल्ली पती पृथ्वी राज चौहान की प्रार्थना पर सर्वरवाप पंचायत ने अपनी सेनाओं की सेवा उसे सौंप दी । मोहम्मद गोरी से हुये तरावड़ी के दोनों युद्वों में 1191 ई. तथा1192 ई. को इन सेनाओं ने अपुर्व सौर्य का परिचय दिया इन महत्वपुर्ण युद्वों में देवत राय रोड़ सागर सिंह रोड़, भूपसिंह रोड़, तथा बीर सिंह रोड़ सुरमाओं द्वारा अपनी सजातिय सेनाओं का नेतृत्व करते हुये देश -धर्म के लिये युद्व में भाग लेने का प्रमाण सौरम रिकार्डस तथा भाट विवरण से मिलता है। तरावड़ी के दुसरे युद्व 1192ई.में गोरी की विजय ने चौहान नरेश के भाग्य का अन्तिम निर्णय कर दिया ।

3.27 राजा के पुत्र-1191 ई. राजपूत राजाओं में तो ऊंच नीच नें अत्यन्त विषैली जड़ जमा ली थी । गुणों की छोड़ कर केवल नाम मात्र राजपूत अर्थात राजा के पुत्र कहलानें के मिथ्या निभानें से घमण्डी बनें रह कर संगठन तथा देश की बात नही सोचते थे इस प्रकार अलग-अलग शक्ति बिखर रही थी । वीर भारत शक्तिहीन हो गया था ।

3.28 वेश्या चित्र रेखा-चारण भाट लोग अपनें-अपनें राजा की झुठी

बढ़ाई करते रहते और आपस में लड़ाते रहते थे । महमुद गजनी की चोट खाकर भी भारत के राजा नही संभले छोटे-छोटे राजा और सरदारों में देश बंट गया था । केवल देहली के आस पास जनतन्त्र का पंचायती संगठन था ।

1191 ई. को चित्र रेख नाम की भारतिय वेश्या थी । जिसकों मोहम्मद गोरी के चचा का लड़का मीर हुसैन भारत से ले गया बाद में मीर हुसैन इस वेश्या को लेकर अजमेर भाग गया । और पृथ्वी राज चौहान के राज्य में शरण ले ली । मोहम्मद गोरी ने चित्र रेखा वेश्या का बहाना लेकर पृथ्वी राज चौहान पर सन1191ई. को हमला कर दिया ।

3.29 पृथ्वी राज चौहान के सेनापति-1191 ई. में पृथ्वी राज चौहान की सेना में सर्वखाप पंचायती सेना का प्रधान सेनापति बड़ा विकट योद्वा सागर सिंह रोड़ था । इसके सहायक सेनापति 3 जाट 5 गुज्जर 4 अहीर 4 ब्राहाण 3राजपूत 2 सेणी सहायक सेनापति थे । हरदन, मरदन,जंगम, बुगली, दहिया विशेष योद्वा थे । जब यह 30 हजार वीर बली चढ गये तब पृथ्वी राज चौहान की 50 हजार सेना आगे बड़ी ।

3.30 सर्वखाप पंचायत ने इन नई परिस्थितियों का मुकाबला करने के उपाय खोजने के लिये ग्राम भान्जू-भेनड़ा के निकट जंगल में जून 1201 ई. को एक सभा का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता विजय राव ने की । इस सभा में हरियाणा से जय राम चौहान रोड़ नारनोंद (रोहतक) तथा चन्दूमल महला रोड़ पलवल (फरीदाबाद) से भाग लिया था ।

3.31 बादली- इतिहास प्रमाणित करता है कि 1164 ई. को राजा राय साल सिंह बादली जागीर का जागीर दार था । बादली की लड़ाई 1208 को पृथ्वी राज चौहान का सेनापति माहील बाध बादली का जागीर दार था । जिस के आस पास सैकड़ों गांव

रोड़ों के आबाद थे ।बादली के मायने अकेले कसबे बादली से नही है । बलकी बादली जागीर से है ।

3.32 बादली- तमाम रोड़ हमेसा से मानते हैं कि वे जिला रोहतक तहसील झझर के पास गुलिया बादली से यहाँ आये हैं । इस बादली में अब भी रोड़ों का दरवाजा व कुवां आदि नामों से प्रकारे जाते है

3.33 अहर गांव -1207 ई. में हरियाणा के जिला पानीपत गांव अहर गोत्र खिची के रोड़ राजस्थान के जयपुर, नरार, जोजरू से आकर आबाद हुये । इस गांव को सेनापपि देवा सिंह की सन्तान ने आबाद किया था । 1299 ई. में किरपी विरांगना इस गांव की लड़की सर्वखाप पंचायत के रिकार्ड, अनुसार सहायक सेनापति बनी ।

3.34 शमर सिंह रोड़-जब तक पृथ्वी राज चौहान के समकालीनों में से केवल शमर सिंह रोड़ को ही आक्षेप करने वालों से उदाहरण मे ग्रहण किया है । जहां तक हमको इस बात में सन्देह नही है कि वे पृथ्वी राज चौहान के बहनोई समकालीन थे ।

3.35 पृथ्वी राज चौहान सोमेश्वर का पुत्र बहीला वन का निवासी कुरु जांगाल का निवासी कहकर अपनी पहचान बतलाता है। कयमास वद्य नामक पुस्तक के पृ. 1 पर गोविन्दराज जो पृथ्वी राज चौहान के मुख्य सामन्तों में था । जय चन्द के राज सुय यज्ञ का निमन्त्रण लेकर जब दूत पृथ्वी राज के पास आता है। वह उसके निमन्त्रण का उतर देते हुये अपने को पृथ्वी राज चौहान कुरु जंगल अर्थात कुरूक्षेत्र जंगल का निवासी बतलाता है

उपरोक्त सोमेश्वर का पुत्र, बहीला वन का निवासी कुरु जंगल (कुरूक्षेत्र जंगल) का निवासी आदि शब्द प्रयोग किये गये है ।

3.36 हिन्दी विश्वकोष के एक उल्लेख अनुसार मुरादाबाद यू. पी. वासी रोड व अन्य चौहान भी अपने को गांव अमीन जिला करनाल से आकर आबाद हुआ मानते है ।

उपरोक्त रिपोर्ट अनुसार हजारों वर्ष पहले अमीन गांव से चौहान रोड़ यू. पी. जाकर आबाद हो चुके थे ।

3.37 पी.एन औक ने चौहान राज्य का विस्तृत वर्णन किया है ।अमीन चौहान राज्य था । कलायत राज्य की सियमाऐं उन दिनों उतर में अलावला गांव, उतर पश्चिम में क्योंड़क गांव, जिला कुरूक्षेत्र, पश्चिम में घघर नदी, दक्षिण में हाठ,अहर, कुराना, पुर्व में यमुना नदी और उत्तर में ऊँचा समाना होती हुई करनाल आदि तक विस्तृत थी । इनके उत्तर में चौहान राज्य स्थापित था। उपरोक्त लाइने अमीन के इर्द-गिर्द चौहान राज्य को प्रमाणित करती हैं

3.38 रोड़ वंश क्षत्रिय जाति है जिसका 700 वर्ष पहले अर्थात 12वीं शताब्दी में अर्थात पृथ्वी राज चौहान के समय एक भव्यशाली इतिहास रहा है ।

उपरोक्त लाइनों में प्रो: देश राज द्वारा लिखित जाटों का इतिहास इस बात को पुर्ण रूप से प्रमाणित करता है कि700 वर्ष पहले अर्थात 12वीं शताब्दी में अर्थात पृथ्वी राज चौहान के समय रोड़ों का एक भव्यशाली इतिहास रहा है। पृथ्वी राज चौहान का शासन ही उपरोक्त रिर्पोट अनुसार रोड़ वंश का शासन था ।

3.39 चौहान वंश- उतरी भारत में सर्वेच्चि राजनैतिक सता हथियाने के उदेश्य से चौहान वंश ने महोबे के चन्देलों और आबु के परमार वंश और कन्नोज के गढ़वालों जयचन्द के राज्यो पर हमले किये ।

उपरोक्त रिपोर्ट अनुसार चौहान वंश ने अर्थात पृथ्वी राज चौहान

ने उत्तरी भारत से ही अपने राज्य का विस्तार किया ।

3.40 विचारणीय है कि चौहान, परमार, भट्ठी और राठौरों ने पंजाब से आकर जैसलमेर व राजस्थान में राज्यों की स्थापना की ।

उपरोक्त अनुसार चौहान वंश अर्थात् पृथ्वी राज चौहान ने पंजाब से आकर (अमीन)राजस्थान में राज्यों की स्थापना की

3.41 पृथ्वी राज तृतीय ही पृथ्वी राज चौहान हैं । बिजोलिया के शिलालेख अनुसार क्रं. सं. 13 सोमेश्वर के पुत्र क. सं.14 पृथ्वी राज तृतीय हैं ।

राजपुताना गजटियर के अनुसार क्रं. सं. 12 सोमेश्वर के पुत्र क्र० सं. 13 पृथ्वी राज प्रथम है ।

उपरोक्त रिपोर्ट बिजोलिया शिलालेख व राजपुताना गजटियर अनुसार दो सोमेश्वर हैं दोंनो सोमेश्वरो के पुत्र पृथ्वी तृतीय व पृथ्वी राज प्रथम है । इतिहास पृथ्वी राज तृतीय को ही पृथ्वी राज चौहान मानता है । जिसका उल्लेख बिजोलिया के शिलालेख में 1226 ई. में किया है।

पृथ्वी राज प्रथम जिनका उल्लेख राजपुताना गजरियर में किया गया है। जो पृथ्वी राज तृतीय से बहुत पहले पैदा हुआ है । राजपुताना गजटियर के अनुसार पृथ्वी राज 1. का वर्णन ही राजपूत इतिहास में किया गया है । बिजोलिया शिलालेख 1226 ई. के अनुसार पृथ्वी राज तृतीय का वर्णन रोड़ इतिहास में किया गया है ।

3.42 पृथ्वी राज द्वितीय की मृत्यु के बाद विशाल हरियाणा में एक भारी उथल पुथल मची जिसकी वजय से सोमेश्वर के लड़के पृथ्वी राज तृतीय अर्थात पृथ्वी राज चौहान नें विशाल हरियाणा-दिल्ली पर अपना कब्जा कर लिया ।क्योंकि वह तमाम भारत का एक सम्राट बनने के स्वपन लिया करता था ।

उपरोक्त रिर्पोट में भी यह प्रमाणित हो चुका है । कि पृथ्वी राज

द्वितीय की मृत्यु के बाद हरियाणा-दिल्ली पर पृथ्वी राज तृतीय ने अपना कब्जा कर लिया । यहाँ पर भी यह बात खुलकर सामने आ गई है । कि राजपुताना में पृथ्वी राज प्रथम ही था । पृथ्वी राज तृतीय ही पृथ्वी राज चौहान था । इतिहासकारों के लिये यह जरूरी है कि वह पृथ्वी राज प्रथम, पृथ्वी राज द्वितीय, पृथ्वी राज तृतीय में भेद समझें जब की ये तीनों अलग-अलग से सोमेश्वर के पुत्र है ।

3.43 रोड़ों पर विजय 1208 ई-5वीं शताब्दी में प्राचीन लोह स्तम्भ मथूरा के राजा चन्द्र नें अपनें राज्य में लगाया था । जिसे बाद में दिल्ली के राजा अनंगपाल द्वारा खरीद कर अपनें किले में लगाया था ।कुतुब दिन की 1208ई. की रोड़ों पर विजय के बाद इसी लोहे की लाठ को मस्जिद में कोर्ट यार्ड के मध्य लया दिया था । इसका घातु व पितल बगैरा का सामान एक यहुदी को बेच दिया था । कुतुबदीन गोरी का गुलाम था जिसको पृथ्वी राज चौहान की हार के बाद दिल्ली की सत्ता सम्भाली थी ।

3.44 समेपुर बादली 1206 ई.- बादली की घटना रोड़ वंश के लिये एक बहुत ही महत्वपुर्ण घटना है । बादली दो है ।

1. समेपुर बादली जो दिल्ली में है जिसमें डोले वाली घटना घटी लेकिन इससे रोड़ वंश का कोई सम्बद लदी है ।

11. गुलिया बादली जो झझर के पास जिला रोहतक में हैं इसी बादली में रोड़ वंश के साथ 1208 ई. में कुतुबदीन वाली घटना घटी थी ।

समेपुर बादली में जो डोले की घटना घटी उस घटना बारे । भरतपुर के राजमन्दिर के राजपुरोहित सोमदत का कथन है कि बादली के एक प्रमुख राजपूत की लड़की का डोला जब एक मुस्लिम प्रमुख ने मांगा तो वह राजपूत रातों- रात अपनी जाति के भाईयों को लेकर कुरूक्षेत्र के जंगल में आबाद हो गये । स्पष्टतः उसका संकेत दिल्ली के

पास वाली समेपुर बादली की और है न की झझर के पास वाली गुलिया बादली की और ।

उपरोक्त लाइनों से प्रमाणित होता है कि डोले वाली घटना दिल्ली के पास समेपुर बादली की है । जबकी रोड़ों का इतिहास झझर के पास वाली गुलिया बादली से जुड़ा हुआ है । जिसका पुर्ण वर्णन आगे दिया गया है ।

3.45 गुलिया बादली:-सिन्ध राज्य की सिमाआगरा (बादलगढ़) खटका नगरी अर्थात यमुनानदी से लेकर कश्मीर अफगानिस्तान तक फैली हुई थी जिसमें भारत के रोहतक हिसार,सरसा, गंगानगर, पाकिस्तान,कशमिर, अफगानिस्तान तक फैली हुई थी । सिन्ध राज्य पर रोड़ वंश के 73 शासकों ने शासन किया । रोड़ वंश के अखिरी शासक दद रोड़ को 620ई. में राजपुरोहित देवा जी ने जहर देकर मार डाला । सिन्ध राज्य के अफगानिस्तान, कशमिर, पाकिस्तान बगैरा के इलाके पर राजपुरोहित देवा जी ने कब्जा 620 ई. में कर लिया । इसके बाद 620 ई.से 712 ई. तक ब्राहाण वंश के पॉच शासको ने सिन्ध पर राज किया जिनके नाम व समय ये है राजा देवा जी 620 ई., राजा साहसी राय 625 से 630 ई. राजा चच 630 ई. से 636 ई. राजा चन्द्र 636 ई. से 644 ई. राजा दाहीर 644 ई. से 712 ई. तक पांच ब्राहाण शासकों ने सिन्ध पर राज किया । 712 ई. में मोहम्मद बीन कासीम ने राजा दाहीर पर हमला कर कर सिन्ध राज्य पर कब्जा कर लिया ।

इस प्रकार से रोड़ वंश के हाथों से 620 ई. में सिन्ध का राज्य निकल गया । रोड़ वंश के 73 राजाओं का वर्णन पहले ही भाग न. 2 में किया जा चुका है । 620 ई. के बाद रोड़ वंश ने जिला रोहतक कि तहसील झझर के पास गुलिया बादली को अपना राज्य केन्द्र स्थापित कर लिया । बादली के आस-पास रोडो के सैकडों गांव आबाद थे । जिनकी पुष्टि अग्रेज सरकार के समय जनगणना में भी की गई हैं । जिस बारे

निम्नलिखित रिर्पोटों से अर्थात एग्रीकल्चर ट्राईब्ज आफ रोड़ कास्ट बाई तहसील एबस्ट्रैकट न.55 सन 1881 ई. व दि रिर्पोट आफ दी सैन्सस कास्ट एण्ड ट्राईब्ज सैन्सस आफ इण्डिया पेज 282 सन1911 के मुताबिक भी अग्रंजों द्वारा रोहतक (दिल्ली डिविजन) में रोड़ आबाद दिखाये गये है ।

सैन्सस रिपोर्ट 1881 ई.व 1911 ई. के अनुसार रोहतक (दिल्ली डिविजन) में रोड़ों की आबादी 39983 थी । जिनमें 22167 आदमी 17516 औरते 163 रोड़ सिख 137 सिख औरते रोहतक में थी। इनके इलावा लौहारू (भिवानी) दुजाणा (रोहतक) पटोदी (गुढ़गांवा) में भी 1911 ई. की सैन्सस रिर्पोट में 1208 रोड़ दिखाये गये है ।1881 ई. की सैन्सस रिर्पोट के अनुसार सांपला (रोहतक) में रोड़ों के खेती बाड़ी करने वाले कबीले 727 है । बल्बगढ़ (रोहतक) में रोड़ों के खेती बाड़ी करने वाले कबिला एक है । रोहतक शहर में खेती बाड़ी करने वाले रोड़ कबिले 8 है। उपरोक्त रिकार्ड 1881 ई. के तहसीलों के खेतीबाड़ी करने वाले कबिलों के आधार पर है । 1911 ई. की सैन्सस रिर्पोट अनुसार रोहतक में करनाल से अधिक रोड़ आबाद है । क्योंकि करनाल की कुल आबादी 39236 है जब की रोहतक में रोड़ो की आबादी 39983 है। उपरोक्त रिर्पोटों से यह प्रमाणित होता है कि 1208 ई. बादली की लड़ाई के समय रोहतक में रोड़ों के सैकड़ों गांव आबाद थे । पूर्ण जानकारी के लिये इसी पुस्तक में 1881 ई व 1911 ई. की सैन्सस रिपोर्ट पढ़े ।

सन् 1191 ई. में पृथ्वी राज चौहान की हार के साथ ही रोड़ वंश का पतन सुरू हो गया था । गोरी की जीत के बाद ही उसने अपने गुलाम कुतुबद्दीन को दिल्ली का गर्वनर नियुक्त कर दिया था । बादली की घटना रोड़ों के इतिहास में एक बहुत ही महत्वपुर्ण घटना है, जिसनें रोड़ वंश की शासकिय शक्ति को पतन में बदल दिया । 1208 ई. में बिन्जलदेव के पुत्र तलवब्रहा ने मांडोगढ़ (मध्यप्रदेश) के किले में पुनः राष्ट्रीय व प्रजातन्त्र के सैनिकों का संगठन खड़ा किया । रोहतक जिले के बादली नामक स्थान पर जब यह सेना पहुंची तो पृथ्वी राज चौहान

के एक मात्र सेनापति माहील बाघ गोत्र महला रोड़ वंश ने पुर्व सहायता का आश्वासन देकर रोक लिया । उस समय बादली माहील बाघ की जागीर का प्रमुख स्थान था ।

इस घटना का वास्तविक सत्य आज तक सर्वथा छुपा रहा है । 1208 ई. में वही सेना बादली नामक स्थान पर जब आई तो पृथ्वी राज चौहान के एक मात्र सेनापति माहील बाघ नें इस सेना की आगवानी की सावन के माह में विश्राम के बाद भादवे की पहली तिथि को दिल्ली पर आक्रमण करने की योजना बनाई । ताकि कुतुबद्दीन एबक से दिल्ली छिन कर दुबारा रोड़ राज्य की निव रखी जा सके । सभी वीरों ने गंगा जल उठा कर दिल्ली विजय के बिना घर वापिस न जाने की प्रतीज्ञा ली।

कुतुबद्दीन एबक ने अजमेर के किले में एक षड्यन्त्र रच डाला। इस सेना को सुचना पहुँचाई गई कि कुतुबदीन दिल्ली छोड़ कर अजमेर भाग गया है । तवल ब्रहा के एक भाई रतन चन्द को भी अजमेर के किले में बुलाया लिया गया । रतन चन्द की सहायता से परमार वंश के कुल राज पुरोहित प्रेमचन्द के द्वारा सावण माह की अन्तिम तिथि श्रावण पूर्णिमा के पर्व को धूमधाम से मनाने का आयोजन किया गया । पर्व की पवित्रता के लिये सभी सैनिकों के शस्त्र शस्त्रागार में रखवा दिये गये । दिन भर यज्ञ-हवन किये गये । भादेव की पहली तिंथि को सूर्योदय से पहले ही स्नान के बाद हथियार उठाने का आदेश पाकर यह निहत्थी सेना निद्रा में मग्न हो गयी । यही निद्रा भारतिय इतिहास की हजारों वर्ष की चीर निद्रा में बदल गयी ।

शत्रु के सैनिक सेना में ही घुसे थे मौका पाकर निहत्थी व सोती हुई सेना कई सेनापतीयों सहीत मोत के घाट उतार दी गयी । सेना ने पुरोहित प्रमेचन्द को दोषी समझ कर उसकी हत्या कर दी ।

रोड़ वंश की शासकिय शक्ति का पुर्ण रूप से पतन हो चुका। बच्चों और बुढ़ो को छोड़ रोड़ बिरादरी में जिवित नही बचा था। 80,000 रोड़ विरांगनाये विधवा हुई थी । युवा और कुवारें वीर जो

देश-धर्म के लिये बलिदान हुये थे उनकी मात्रा भी बहुत अधिक थी । 1208 ई. में एक समय वो भी आया जब रोड़ विरांगनाओं ने अपनी व, अपनी सन्तानों की रक्षा के लिये महिलाओं की सेना खड़ी करनी पड़ी। इस समय में अपने व पराओं से महिलाओं कि सम्मान रक्षा एक चिन्तनिय विषय था । क्योंकि इस लड़ाई में रोड़ युवा व पुरूष पुर्ण रूप से खत्म हो चुके थे ।

कुरुक्षेत्र में जहाँ पहले से अमीन जागीर में रोड़ों के 84 गांव आबाद थे । कुरुक्षेत्र में रहकर राजवन्ती ने महिलाओं व बच्चों की रक्षा के लिए एक विशाल रोड़ विधवा महिला विरांगनाओं की 80,000 की सेना संगठित की । आगे चलकर इसी सेना की सेनापति भागीरथी रोड़ विरांगना जो अस्सी हजार महिला सेना की सेनापति थी । गांव अहर जिला करनाल की किरपी खिंची रोड विरांगना 1299 ई० में इस सेना की सहायक सेनापति बनी ।

बिन्जल देव के पुत्र तवल ब्रह्म की सन्तान गांव मोरखी जिला जीन्द में मडगौत्र, इनके दूसरे भाई बलभद्र की सन्तान गांव ढाठरथ जिला जीन्द में बालदा गौत्र तीसरे भाई चन्द्रभान की सन्तान गांव कैमला जिला करनाल में ढाकर गौत्र, सेनापति माहिल बाघ की सन्तान पहले से आबाद गांव मुहाणा जिला रोहतक में महला गौत्र से आबाद है। बिन्जल देव के चौथे पुत्र रतन चन्द जिन्होंने अपने भाईयों से विश्वासघात किया था । उनकी सन्तान कलान्नोर, खरक, कलंगा आदि गांवों जिला रोहतक में पवार राजपूत बन कर रह रहे थे । अन्य सेना यमुना पार शामली के पास जाट परमार बन कर रह रहे हैं ।

इसी प्रकार जल सिंह का विवाह गांव खरखोदा जिला रोहतक में खंगड़ गौत्र की लड़की लादो देवी जो हरचन्द रोड़ की लड़की थी से हुआ । इन्होंने 1245 ई० कौल के नजदीक दादा खेड़ी आबाद की और बाद में कौल पर हमला कर चौहान राजपूतों से अपने कब्जे में ले लिया था । कौल गांव में आबाद हो गये ।

समधान गौत्र कगरोल खेड़ा जिसको विजयभान के पुत्र राजा खंगड़ रोड़ ने बनाया था । कगरोल खेड़ा से बादली आये, 1208 ई॰ को बादली से करेला झमेला आये, करेला-झमेला से सांबत खेड़ा आबाद हुए, सांवत खेड़ा से 1468 ई॰ को चुहड़माजरा में आबाद हुये । यहीं से समधान गौत्र आगे फैला ।

3.46 उत्तर प्रदेश में बसे रोड़ों के विषय में एकत्रित सूचना के आधार पर तैयार की गई । विलियम क्रूक की पुस्तक के अंश जो इस प्रकार हैं । सहारनपुर में बसे रोड़ों का कहना है कि वो महाभारत के समय कृष्णजी के समय में कैथल से यहाँ सहारनपुर आये थे ।

बिजनौर में आबाद रोड़ चार शताब्दी पूर्व फत्तेपुर पुण्डरी जिला करनाल से यहाँ बिजनौर आकर आबाद हुए थे । यह रिपोर्ट 1896 ई॰ की जनगणना के आधार पर दी गई है । आज इस रिपोर्ट को 112 वर्ष बीत चुके हैं । अर्थात् आज से 512 वर्ष पहले फतेपुर पुण्डरी से बिजनौर जाकर रोड़ आबाद हुए ।

विलियम क्रूक की उपरोक्त रिपोर्ट रोड़ वंश को महाभारत के समय से करनाल, कैथल में आबाद मानती है । अर्थात् आज से 5000 वर्ष पहले से रोड़ वंश करनाल कैथल में आबाद है । यह रिपोर्ट अंग्रेज विलियम क्रूक ने भारत की जनगणना करते वक्त 1896 ई॰ की जनगणना के समय दी गई है । विलियम क्रूक ने यह रिपोर्ट ट्राईब्ज एण्ड कास्ट पृ॰ 243-246 पर दी थी ।

3.47 सहारनपुर क्षेत्र के रोड़ों का दावा है अर्थात् वो इस बात को मानते हैं कि उनकी उत्पत्ति कैथल में महाभारत युद्ध के दौरान श्रीकृष्ण जी के समय हुई थी ।

बिजनौर में आबाद रोड़ों का दावा है कि 1490 ई॰ को फत्तेपुर पुण्डरी जिला करनाल से यहाँ बिजनौर आकर आबाद हुये थे । सईयद और रोड़ों में आपस की लड़ाई के बाद वो अपने बुजुर्ग महीचन्द के साथ

बिजनौर आकर आबाद हुये थे ।

3.48 पृथ्वी राज चौहान ने मुझे (गोरी) को सात बार कैद किया और छोड़ दिया ।

3.49 किरपी विरांगना 1299 ई॰-अहर गांव जिला करनाल की किरपी विरांगना सहायक सेनापती चुनी गई थी । शाहदरा-गाजिया बाद के मध्य 1299 ई॰ में हुई सर्वखाप पंचायत सभा में रोड़ों की उपस्थिति का स्पष्ट पता चलता है जिसमें अलाऊद्दिन खिलजी की प्रार्थना पर 75000 भल्ल योद्धाओं की एक विशाल सेना तैयार करनें का निर्णय लिया गया । साथ ही क्षत्रिय विरांगनाओं को भी इस सेना की सहातार्थ तैयार करने का निर्णय लिया गया। इस सेना की संख्या 28000 थी ।

3.50 किरपी विरांगना 1299 ई॰ को 28000 महीला विरांगनाओं की एक सेना खड़ी की जिसकी दस सहायक सेनापति निम्नलिखित थी ।

1. किरपी रोड़ पुत्री 2. मोहीनी गुर्जर पुत्री 3. लडक्कौर राजपूत पुत्री 4. बिश्नदेई भंगी पुत्री 5. सहजो ब्राहाण पुत्री 6. निहालदे तगा पुत्री 7. सुन्दर कुमारी कोली पुत्री 8. रंजना सुनार पुत्री 9. चान्द कौर बनियापुत्री 10. नाहर कौर कायस्थ पुत्री

3.51 उप सेनापति चम्पत सिंह रोड़-1299 ई॰ से 1305 ई॰ मध्य हुये युद्धों में मातृ भूमि की रक्षा के लिये अलाउद्दिन खिलजी के नेतृत्व में भाग लिया । यह सभा 1299 ई॰ में प्रथम भंगोल आक्रमण होने पर हुई थी । इससे चार उप सेनापतियों एव पराभर्शदाताओं में से चम्वत सिंह रोड़ भी था । स्पष्टत: देश भक्तों से कन्धे से कन्धा मिलाकर रोड़ों ने भंगोलो के विरूद्व 1299 ई॰ से 1305 ई॰तक मध्य हुये युद्वों में मातृ भूमि की रक्षा के लिये अलाउद्दीन खिलजी के नेतृत्व में भाग लिया ।

3.52 चार रोड़ वीर शहीद- 1352 ई० में बादशह फिरोजशाह तुगलक नें हिन्दुओं पर जजिया कर लगा दिया ।मुसलमान बनने पर ही जजिया कर से माफी मिल सकती थी ।

सर्वखाप पंचायत नें इन शाही अत्याचारों को दूर करवानें के लिये एक बलिदान दल बनाया । सवय सेवक योद्धा वीरों को चुन कर बादशाह के दरबार में दिल्ली भेजा ।

210 बलिदानियों की अलग- अलग संख्या ये थी ।

जाट-66	ब्राह्मण-25	कलाल-25	अहीर-15
गुर्जर-15	राजपूत-15	वैश्य-1	हरिजन-9
बढ़ई-12	लुहार-6	सैणी-5	जुलाहें-5
तेली-5	कुम्हार-4	खटीक-4	रोड़-4
रवे-3	धोबी-3	नाई-2	जोगी-2
गोसाई-2			

फिरोज तुगलक के दरबार में निर्दयी काजी नें उन 210 वीरों को बर्बरता से अग्नि में धकेल दिया । जोनपुर वासी एक बहादुर पठान मुन्नू खॉ युसुफ जई नामक फिरके का था । वह इस अन्याय को सह न सका हत्यारे काजी का सिर काट दिया।

3.53 सेनापति गंगू रोड़ 1388ई० से 1404 ई०- फिरोज तुगलक 1388 ई० के मध्य तुगलक सुलतान नितान्त अयोग्य निकले जिससे विशाल दिल्ली राज्य टूट गया । परिस्थिति को देखते हुये 1399 ई तिरपडाह- दोगठ के मध्य में सर्वखाप पंचायत का सम्मेलन बुलाया गया । जिसमें अस्सी हजार मल्ल योद्धाओं और चालीस हजार महिला विरांगनाओं की विशाल सेना तैयार करने का प्रस्ताव पास किया गया इस सेना में सहायक सेनापति गंगू रोड़ को इस सेना की कमान सोंपी गई ।

3.54 सेनापति गंगू रोड़-1397 ई० को तैमूर लंग से युद्व में लड़ने के लिये सर्वखाप पंचायत ने एक सेना का संगठन किया । जिसके निम्नलिखित 20 सहायक सेनापति नियुक्त किये गये ।

1. गंगू रोड़ 2. सुबेदार मांडू गुर्जर 3. शम्भू गुर्जर 4. नानू राजपूत 5. हरबंश राजपूत 6. गोकुल कायस्थ 7. लालू वैष्णव 8.अमयराम बैरागी 9. बलदेवा खा 10. भूला जोगी 11. रतिया जोगी 12.नामू 13. अलमा तगा 14. चन्दन जाट 15. रैहतु वैश्य 16. जमना जाट 17. जोगराज धीमान 18. पलटू कुम्हार 19. छतरा राजपूत 20. कल्लू तेली

3.55 दिसम्बर 3 सन 1398 ई० को तैमूर लंग कैथल असन्ध -साल वन को बर्बाद करता हुआ पानीपत से तैमूर गुजरा इस भुभाग में रोड़ वंश के अनेक गांव पड़ते थे । उन्होनें भी इस भ्यानक आक्रमण के अनुभवों का सामना करना पड़ा ।

3.56 दयाल रोड़ - मई 1419 ई० को हरिद्वार में रामदेव जाट की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन देश की राजनैतिक एव सामाजिक व्यवस्था का जायजा लेनें के लिये किया गया । जिसमें सन्त हरिगिरी गुसाईं विजयनगर से आकर सामील हुये थे वे हरियाणा वासी वीर- साहसी पहलवानों को देख कर बड़े प्रभावित हुये । जब उन्होनें विजयनगर वापीस जाकर वहाँ के शासक देवत राय द्वितिय 1406-1446 ई० को यह बात बतलाई तो उन्हे सर्वखाप पंचायत मुज्फरनगर के पाँच मल्ल योद्वा अपनी सेनाओं को पारंगत करनें हेतु भेजनें का आग्रहात्मक पत्र लिखा प्रत्युत्रर में इस संगठन ने युद्व कला में पारंगत पांच मल्लों का एक जत्था विजय नगर भेजा जिसमें दयाल रोड़ भी सामील था

3.57 शंकर खिची रोड़ 1448 ई०- जब मेवाड़ के शासक महाराणा मोकल की असामायिक हत्था ने मेवाड़ में अस्त-व्यस्तता फैला दी मेवाड़ के कतिपय सामन्तों ने स्वतन्त्र होने के लिये विद्रोह

किये और गुजरात व मालवा के सुलतानों ने इस राज्य पर अपनी गिदघ दृष्टी डालनी आरम्भ की तो इन कठिनाईयों पर नियन्त्रण करने के लिये महाराणा कुम्भा ने सर्वखाप पंचायत को परार्मशदाता भेजने के लिये पत्र लिखा । इसके परिणाम स्वरूप दो अलग-अलग समयों में भेजे गये पाँच-पाँच व्यक्तियों के दलों में शंकर खिची रोड़ सम्मिलित था ।

3.58 शितल चन्द रोड़ 1451 ई॰ -1451 ई॰ को विजयनगर सेना को सिखलाई देने के लिये सर्वखाप पंचायत नें छे मल्ल योद्वा विजयनगर राज्य को भेजे थे ।

1. शीतल चन्द रोड़ 2. शंकर देव जाट 3. शिवदयाल सिह गुर्जर 4. चण्डीराम राजपूत 5. ओझा राम जांगड़ा 6. ऋबलदेव कोली जाट विजय नगर राज्य में आज के मैसूर, कर्नाटक, हैदराबाद, आन्ध्रप्रदेश, केरला, मद्रास सब सम्मिलित थे ।

3.59 हरिराम कदियाण रोड़- सर्वखाप पंचायत सौरम के तत्वाधान में विभिन्न अखाड़ों की व्यवस्था की गयी थी । जिनमें वीर मल्ल योद्वाओं को पहलवानी के साथ-साथ युद्व के दाव पेचों के विषय में भी जानकारी दी जाती थी । अस्त्र-शस्त्रों को चलानें का अभ्यास करवाया जाता था । ऐसा ही एक अखाड़ा महाराज पुरा मुजफरनगर में भी था । इस अखाड़े में अन्य व्यक्तियों के साथ-साथ हरिराम कादियाण रोड़ भी था ।

3.60 शंकर दयाल रोड़ 1461 ई॰-1461 ई॰ को चितोड़गढ़ के राणा रायमल को सहयोग देने बारे राणा के निमन्त्रण को प्राप्त कर सर्वखाप पंचायत ने एक छोटा अधिवेशन हस्तिनापुर के खण्डहरों में बुलाया इसमें सब बिरादरियों के 4223 पंच पहुँचे । इस अधिवेशन का सम्मानित प्रधान राम सहाय त्यागी चुना गया । इन सब बिरादरियों के 109 प्रतिनिधी सामील हुये । इनमें सर्वखाप पंचायत के आठ प्रमुख नेता भी विराजमान थे । जिनके नाम ये हैं ।

1. कुलवन्त राय गुर्जर -प्रधान
2. शंकर दयाल रोड़ -उप प्रधान
3. अभेद पाल राजपूत -उप प्रधान
4. चेतराम ब्राझण -उप प्रधान
5. बनवारी सिंह खा -उप प्रधान
6. सूरत प्रकाश जाट -प्रधान सेनापति
7. बलबीर सिंह अहीर -उप सेनापति

3.61 राम दयाल रोड़ 1465 ई॰- 1465 ई॰ चितौड़गढ़ में राणा कुम्भा ने जाट, गुर्जर, अहीर, रोड़ और सैणी आदि सभी कुलों के वीरों को एक सूत्र में बाँध दिया। ये सभी वीर राजकूलो से सम्बन्ध रखते थे । देश की व्यवस्था पलट रही थी । कोई कहीं गया। कोई कही राणा कुम्भा के यत्न से ये सरदार एक सूत्र में एक नाम के अधीन पिरो दिये गये । इन सब कुलों को मिला कर सन 1465 ई॰ में राजपूत शब्द प्रचलित किया गया क्योंकि ये सब राजाओं के पुत्र थे । इसलिए यह शब्द दिया गया ।

चितौड़ गढ़ की सभा

एक बार राणा कुम्भा ने भारत के सब भागों से समाज सुधार के लिये वीर लोग बुलवाये थे । इस सभा में सर्वखाप पंचायत को न्यौता दिया गया था । सर्वखाप पंचायत ने पंच पाँच चितौड़गढ़ की सभा में भेज थे । जिनके नाम ये है ।

1. राम दयाल रोढ़
2. राव हर किशन राय जाट
3. सुरेन्द्र प्रकाश राजपूत
4. शुकदेव राम गुर्जर
5. महताब मल अहीर

3.62 अकाल सन 1580-81 ई॰ 1880-81 ई॰ में देश में अनोवृष्टि

के कारण अकाल की स्थिति होने के कारण पंजाब तथा उत्तर प्रदेश में यमुना के दोनों और बसे लोगों ने पहले राजस्व अधिकारियों से लगान न उगाहनें की प्रार्थना की। जब इस बात की ओर ध्यान नही दिया गया तो सर्वखाप पंचायत के नेताओं ने लगान न देने का निर्णय लिया। 21 व्यक्तियों को गिरफतार कर- कर अकबर के सामने प्रस्तुत किया गया। जिनमे एक रोड़ चौधरी भी था। इसका रिकार्ड में नाम अपठनिय होने के कारण अज्ञात है। बाद में अकबर ने इनकी कठिनाई के बारे में सुन कर बरी कर दिया।

3.63 कर्म चन्द रोड़ 1598ई०-1598ई० अकबर के राज्य काल में सर्वखाप पंचायत की एक अन्य सभा मथुरा में प्रीतम सिंह पवार की अध्यक्षता में हुयी। इस सभा ने शान्ति एव सुरक्षा व्यवस्था के लिये 30 हजार योद्धाओं की एक सेना तैयार रखने का प्रस्ताव पास किया गया। इस सेना का प्रधान सुखराम जाट व उप सेनापतियों में से एक कर्म चन्द रोड़ था।

3.64 नर सुलतान रोड़ 1606 ई०-क्षत्री नर सुलतान ने सन 1606 ई० दिन अमावस को किचागढ़ में मेनपाल के घर जन्म लिया। इनके दादा का नाम चकवा बैन गोत्र रवींची रोड़ वंश था। इनके मस्तक में मणी पैरों में पदम था। जानी चौर जो गढ़ी चौर का रहने वाला था। इनका गहरा दोस्त था। केलागढ़ (करनाल) के मेघराज की कन्या कवर निहाल दे की शादी क्षत्री सुलतान के साथ हुयी। कवर निहाले दे का शिश महल जिसमे वह निवास करती थी। यह महल पश्चिमी यमुना के दक्षिणी किनारें पर इन्द्री कस्बा (करनाल) गांव गुढ़ा रोड़ान की जमीन में आबाद था। जो आज भी खण्ड रात के रूप में पड़ा हुआ है। क्षत्रिय नर सुलतान अपने दोस्त जानी चौर व गोधू जाट के साथ मिलकर शाहजहाँ और औरंगजेब के शासन काल में अनेक हिन्दू लड़कियो को मुस्लमानों की कारागार से निकाल कर

मुसलमान बनाने से रोकता था। उसने कई लड़कियों से सवयं शादी भी की। जैसे देवा दे, लोंगा दे, महक दे, कंवर निहाल दे आदि। नर सुलतान गुरिला (छापामार) लड़ाई लड़ता था।

3.65 तेज पाल रोड़1627 से 1658ई०- के शाहजहाँ के सिहासना-रोहण समारोह में सर्वखाप पंचायत के 25 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। जिनमें एक तेज पाल रोड़ भी था। इन पंचों ने मिलकर शाहजहाँ को शहनशाह की उपाधी से अदब के साथ भेंट देकर गद्दी पर बैठाया था।

3.66 टूरण गोत्र के रोड़ 1632 ई० में जोगी बने- क्षत्रिय नर सुलतान की वीरता भरी गाथाओं को गाने वाले टूरण गोत्र के रोड़ जोगी बनें। जिनका गोत्र आज भी टूरण ही हैं। वो इस समय गाँव अहर जिला पानीपत व गाँव सिकरी जिला करनाल में आबाद हैं।

3.67 गाँव झंझाड़ी आबाद 1636 ई०-रोड़ बहुत गाँव झंझाड़ी को 1636 ई० में मध्य प्रदेश से आये अमर सिंह रोड़ गोत्र महला ने आबाद किया था।

3.68 नैन मुख रोड़ 1577 ई०-राजा बीर सिंह बधेला दिल्ली और होली के पर्व पर दिल्ली से शिशोली आया। यहाँ के उत्सव की उत्तमता और वीर योद्धाओं को देखकर चकीत रह गया। उसने मेला और मल्लों का प्रर्दशन देखकर बड़ा आश्चर्य माना।

सर्वखाप पंचायत से अपनी सेना को सिखलाई देने के लिये कुछ मल्लयोद्धा मांगे। सर्वखाप पंचायत शौरम ने 19 मल्ल योद्धाओं को रीवां राज्य भेजा जिनके नाम इस प्रकार है

1. नैन मुख रोड़ 2. किर्तिमल गांव किरठन 3. मुकन्द राम खां 4. भीम पाल गांव ताहरभविसा 5. चौहल राम गांव छपरोली 6.बलकरण गांव बावली 7. नैना राम गांव निवाड़ 8. भगवती

चरण गांव भीखरेड़ी 9. डेवाराम गांव ढिकोली 10. करण पाल गुर्जर 11. वीरन्देव राजपूत 12. मोकलचन्द गांव गुलिया बादली 13. सैदाराम गांव सैदपुर 14. दादूराम दहीया 15. मेहरचन्द त्यागी 16. खुबी राम सैणी 17. मेहर चन्द कोली जाट 18. रणुदुला राजपूत 19. मेहरूदेवा मान

3.69 रोड़ वीरों का बलीदान 1669 ई०-औरंगजेब का निर्दयी आदेश सन् 1669 ई० को औरंगजेब के आदेश पर 300 सैनिको सहीत जिनमें रोड़ सैनिक भी थे । और 21 नेताओं सहीत सबको चांदनी चौंक में लाकर कातीर्क बदी दशमी प्रात्र: दिन के 10 बजे जल्लादों ने इनको निर्ममता से काट डाला । 11 बजे राजा जयसिंह के बहुत कहनें पर इनके मृतक शरीर पंचायती लोगों को दिये ।

21 बलिदानी नेताओं के नाम

1.	राव हरी राम	2.	हरदेव सिंह
3.	फूल सिंह	4.	शीश राम
5.	फूल सिंह	6.	रामलाल
7.	बलीराम	8.	लालचन्द
9.	हरीपाल	10.	नवल सिंह
11.	गंगा राम	12.	चन्दूराम
13.	हरसहाय	14.	हरवंश
15.	नेतराम	16.	मनसुख राम
17.	भूलचन्द	18.	हर देवा
19.	राम नारायण	20.	भोला प्रशाद
21.	हरद्वारी मल		

इन नेताओं का व्योरा निम्नलिखित है ।

रोड़ एक, रखा एक, सैणी एक, तगा एक, ब्राझण दो, राजपूत तीन, जाट ग्यारह, कुल जोड़ - 21

3.70 महल लाल कोट-पृथ्वी राज रासो हमें बतलाया है कि पृथ्वी राज चौहान यमुना के किनारे पर बनें महल में रहता था। पृथ्वी राज चौहान का महल लालकोट के नाम से जाना जाता था । जिसका ढांचा लाल दीवारों से बना हुआ था । दिल्ली में इस किसम की एक ही इमारत है जिसे आज कल लाल किले के नाम से जाना जाता है । इस इमारत को बनानें का श्रेय शाहजहाँ को दिया जाना गलत है । लाल किले का निर्माण करने वाले पृथ्वी राज चौहान ही हो सकते हैं ।

3.71 सोहन सिंह रोड़ 1701 ई०-1701 ई० में गुरू गोविन्द सिंह हरियाणा में पहुँचे थे जहाँ पर अनेक मण्डलिक साधु रूप में उनका प्रचार करते थे । जिनमें से कुछ के नाम ये है। 1. सोहन सिंह रोड 2. महावीर सिंह जाट 3. तेलू राम जोगी 4. हरदेव चन्द गुर्जर 5. महासिंह राजपूत 6. मोहन लाल ब्राझण

3.72 कल्लू सिंह रोड 1701 ई०- 1701 ई० में गुरू गोविन्द सिंह विशाल हरियाणा में आये । गुरू जी ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि बलिदान देने वाले वीर आगे आ जायें और जिन्हे अपना परिवार प्यारा हो घर लोट जायें । इस कथन पर 2000 लोग वापिस घर लोट गये । परन्तु सर्वखाप पंचायत के 1200 मल्ल वीरों ने वही अपनें 6 नेता चुनें और यह प्रतिज्ञा ली । हम अपनें शरीर का अंग- अंग देश हीत में कटवा देगें परन्तु पीठ नही दिखलायेंगे । वे छे नेता ये थे ।

1.	कल्लू सिंह रोड़	2.	सेवा राम जाट
3.	मेघा राम गुर्जर	4.	श्योनखश अहीर
5.	धोकल कोली जाट	6.	सरजू भंगी

1200 मल्ल वीर

जाट-600, गुर्जर-300, अहीर-सैणी-200, रोड़- 40, राजपूत-20,

ब्राह्मण-10, कहार व अन्य-30, भागी मैदान के युद्व में यह सेना ओरंगजेब के साथ लड़ी थी । गुरूगोविन्द सिंह की इसी सेना नें औरंगजेब को भागी के मैदान में हराया था ।

3.73 वीर बन्दा बहादूर 1706 ई॰- विशाल हरियाणा की इस पंचायती सेना में रोड़, जाट,गुर्जर,अहीर, सैणी राजपूत, तगा, भंगी, नाई, धानक, ब्राह्मण थे । वीर बन्दा के नेतृत्व में इन सेनापतियों और पंचायती मल्लों नें शाही सेनाओं को सहारनपुर, ननौता, नजीबाबाद, मुरादाबाद जलालपुर, तरावढ़ी और सरहिन्द आदि स्थानों में शाही सेना से 11 युद्व वीर वर जगमोहन ने जीते थे ।

3.74 जय सिंह रोड़- 17वी शताब्दी में जयपुर पर रोड़ वंश के शासक जय सिंह का शासन था । जिनका राज्य मथुरा-आगरा तक फैला हुआ था । राजा जय सिंह रोड़ के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र ईश्वरी सिंह रोड़ शासक बनें थें । राजा ईश्वरी सिंह का वर्णन इससे अगले अंग में किया गया है । महाराजा जय सिंह के आगरा में तेजोमहालय नामक प्राचीन शिव मन्दिर था । इसी तेजोमहालय नामक शिव मन्दिर को बाद में बादशाह शाहजहा नें ताजमहल में बदल दिया ।

इतिहास की पुस्तकों में यही उल्लेख मिलता है कि यह विशाल स्मारक 1631 ई॰ से 1653 तक 22 वर्षो में बन कर तैयार हुआ था। लेकिन ढाई दशक पुर्व प्रो: पुरूषोतम नारायण ओक की मराठी में लिखी पुस्तक“ताजमहल ही तेजोमहालय है” ने चारों और सनसनी फैला दी थी । इस पुस्तक में प्रो॰ ओक ने जिक्र किया था कि शाहजहां और मुमताज में इतनी मोहब्बत नही थी जितनी बताई जाती है । इन दोनों की प्रेम कहानी चापलूस दरबारियों द्वारा गढ़ी गई एक परिकथा की तरह थी। अपनी किताब में अनेक उदाहरण देते हुए प्रो॰ ओक ने न्यूयार्क के प्रोफैसर माराविन मिलर के शोध ग्रन्थ का उल्लेख किया है । मिलर ने यमुना नदी किनारे स्थित ताजमहल के द्वार से चट्टानों के कुछ नमूने

लिए थे । उन पत्थरों पर कार्बन डेटिंग परीक्षण से यह सिद्ध हुआ था कि वह दरवाजा शाहजहाँ के काल से 300 वर्ष पहले का है ।

प्रो॰ ओक के अनुसार वह तेजो महालय नामक प्राचीन शिव मन्दिर है जिसे शाहजहाँ ने जयपुर के महाराजा जयसिंह से हथिया लिया था । बाद में उसने इसे ताजमहल का नाम देकर वहाँ अपनी बेगम मुमताज को मरणोपरान्त दफन कर दिया । शाहजहाँ के दरबारी दस्तावेज 'बादशाहनामा' में इस बात को स्वयं शाहजहाँ ने कबूल किया है । वही जयपुर के पूर्व महाराजाओं के गोपनीय दस्तावेजों में भी उन दो आदेशों का उल्लेख है, जिनके अनुसार महाराजा जयपुर का यह शिव मन्दिर शाहजहाँ को सोंपना पड़ा था । इन प्रमाणों के अलावा कुछ विदेशी यात्रियों के संस्मरण भी इसी तरफ इशारा करते हैं । बताया जाता है कि जान अल्बर्ट में डलस्को नामक यूरोपियन यात्री ने बेगम मुमताज की मृत्यु के सात साल बाद 1638 ई॰ में भारत की यात्रा की थी । जान अल्बर्ट ने आगरा के लोगों के जीवन के बारे में बहुत कुछ लिखा है । लेकिन उसने इस बात का जिक्र नहीं किया है कि उस समय ताजमहल निर्माणाधीन था । एक अन्य रात्रि पीटर मुंडो ने आगरा की यात्रा उस समय की थी जिस वर्ष बेगम मुमताज की मृत्यु हुई थी । वह लिखता है कि शाहजहाँ के समय से पूर्व आगरा में तेजोमहालय नामक एक सुन्दर भवन था । प्रो॰ ओक ने वास्तुशिल्प सम्बन्धी बनावटों के अनेक उदाहरण भी दिए हैं, जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि ताज महल असल में पूर्ण रूप से हिन्दू शिल्प व संस्कृति को प्रदर्शित करने वाला एक मन्दिर ही था ।

रोड़ वंश के 73 शासकों ने जो वीर रुरू से राजा दद रोड़ 620 ई॰ तक 3720 वर्ष सिन्ध राज्य पर शासन किया । जिसकी सीमाएं आगरा से खटकानगरी यमुना के पश्चिम किनारे से अफगानिस्तान तक फैली हुई थी । इन राजाओं की राजधानी आगरा के पास ही खटकानगरी थी । रोड़ शासकों के किले जो खण्डरात के रूप में आगरा के चारों तरफ फैले पड़े हैं । जैसे खटकानगरी का किया आगरा के उत्तर दिशा

में कगरोल का किला, तिसमानगढ़ का किला, खेड़ा गढ़ का किला जिनका आर्केल्योलोजिंकल सर्वे रिपोर्ट ऑफ इण्डिया वर्ष 1871-72 भाग-4 पृ॰ 209-211 के आधार पर प्रमाणित है ।

3.75 ईश्वरी सिंह रोड़ - 1747 ई॰ जय सिंह की मृत्यु के बाद उनका पुत्र ईश्वरी सिंह जयपुर की गद्दी पर बैठा । अहमद शाह अब्दाली ने 1747 ई॰ को सतलुज नदी के किनारे से जयपुर राज्य पर चढ़ाई कर दी । जयपुर के शासक ईश्वरी सिंह ने अपनी सेना सेनापति कमरू के साथ भेजकर अहमदशाह अब्बदाली पर चढ़ाई कर दी । अहमद शाह अब्बदाली की एक विशाल सेना थी । राजा ईश्वरी सिंह की सेना अहमदशाह अब्बदाली की सेना पर टूट पड़ी । इस लड़ाई में अहमदशाह अब्बदाली की सेना को अरब की तरफ भागने के लिए मजबूर कर दिया । इस लड़ाई में राजा ईश्वरी सिंह ने अपने राजभाट बडवाजी गुलाब चन्द को जयपुर से करनाल सैनिक भर्ती करने के लिए भेजा था।

इस सेना में बड़ी मात्रा में करनाल से रोड़ सैनिक भर्ती किए गए। जो जयपुर की सेना से मिलकर अहमदशाह अब्बदाली की सेना से लड़ें । उनका संचालन करने वाला हेमराज रोड़ गांव बसतली जिला करनाल का था । राजा ईश्वरी सिंह की सेना में जिला करनाल से निम्न लिखित सेनापति व सहायक सेनापति थे ।

1. हेमराज रोड़ गांव बसतली — सेनापति
2. नीरंजन रोड़ गौत्र खिंची गांव अहर — उप-सेनापति
3. गढ़मल रोड़ गांव मुन्दड़ी — सेना अधिकारी
4. जोध के लड़के देसल व लुणु गांव मुन्दडी — सेना अधिकारी
5. बीक्रम रोड़ गांव कौल — सेना अधिकारी
6. दीप चन्द रोड़ गांव सांच — सेना अधिकारी
7. बरीसाल रोड़ गांव रसीना — सेना अधिकारी,

8. इस सेना में जिला करनाल से हजारों रोड़ सैनिक भर्ती किए गए थे । गांव जडोला के सबसे अधिक जबान थे।

जिस अहमदशाह अब्बदाली को 1747 ई॰ में रोड़ों ने सतलुज दरिया पर हराया था । उसी अहमद शाह अब्बदाली ने चौदह वर्ष बाद 1761 ई॰ को पानीपत की तीसरी लड़ाई में मराठों को हराया था ।

3.76 सेनापति कल्लू रोड़ - 1701 ई॰ में गुरु गोबिन्द सिंह विशाल हरियाणा में पहुँचे थे । गुरुजी ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि बलिदान देने वाले वीर आगे आ जायें और जिन्हें अपना परिवार प्यारा हो घर लौट जायें । इस कथन पर 2000 लोग वापिस लौट गए । परन्तु सर्वखाप पंचायत के 1200 मल्ल वीरों ने वही अपने 6 नेता चुने और यह प्रतिज्ञा ली । हम अपने शरीर का अंग-अंग देशहित में कटवा देंगे, परन्तु पीठ नहीं दिखलायेंगे।

यही सेना भागी के मैदान में औरंगजेब के साथ लड़ी थी । गुरु गोविन्द की इसी सेना ने औरंगजेब को भागी के मैदान में हराया था । कल्लू रोड़ की वीरता बारे एक कविता जो एक ग्रन्थ से मिली है जिसका लेखक निहाल सिंह आर्य ग्रन्थ का नाम सर्वखाप पंचायत राष्ट्रीय पराक्रम भाग 50 के पृ॰ नं॰ 347 से ली गई है ।

सर्वखाप पंचायत के अन्दर हर जाति का भाई था,
चौ॰ सहमल सिंह बिजरौल का सच्चा जाट सिपाही था ।
राजपूत ठाकुर जालिम सिंह रणखण्डी का भाई था,
मन्नू छीपी धुल्ला भंगी अब्बदुल्ला पीराही था ।
झण्डू गडरिया कालू धोबी और मामचन्द नाई था,
मुंजू शेख और अशकी सैयद फत्तू वीर कसाई था ।
रवा रामचन्द्र अहीर मामचन्द बल्लू ब्राह्मण न्यायी था,
नानू चमार बारू कुम्हार श्री कर्मा कहार सहायी था ।
बनिया देवी सहाय भी मिलकर करता रोज लड़ाई था,
वीर भवानी त्यागी भी दिखलाता वीर ताई था ।
कल्लू रोड़ और अर्जुन खाती लेकर लड़ता बाही था,
धर्मा जोगी कालू धोबी राधा माली हाई था ।

3.77 देवत राय रोड़ मण्डलिक गांव बक्सिया (झांसी) जयराम रोड़ मन्डलिक नारनौद (रोहतक) चन्दुमल महला रोड़ मन्डलिक पलवल (फरीदाबाद) थे, सभी पृथ्वी राज चौहान के राज्य में थे ।

3.1 देखें :- कनिघम रिपोर्ट पृ॰ 210

3.2 देखें :- जार्ज कैम्पबेल एथोनोलोजी ऑफ इण्डिया से

3.3 देखें :- आर्केल्यो लोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया वर्ष 1871-72 भाग-4 पृ॰ 209-211

3.4 देखें :- ईबेटसन रिपोर्ट पृ॰ 178

3.5 देखें :- इतिहासकार प्रमात्मासरन

3.6 डॉ॰ हरनाम सिंह मोगा, अरोड वंश जातीय इतिहास पृ॰ 23

देखें :- रोड़ों के राज भाट सुलतान सिंह व देशराज कृत रोड़ इतिहास

देखें :- डॉ॰ राजपाल सिंह रोड़ इतिहास की झलक

3.7 सी॰पी॰ वैद्य हिस्ट्री ऑफ मिडिवल हिन्दू इण्डिया भाग-1 पृ॰ 178-81

3.8 डॉ॰ हरनाम सिंह मोगा, अरोड वंश जातिय इतिहास

3.9 डॉ॰ गोरी शंकर हिराचन्द ओझा, पदमावती समय पृ॰ 52

3.10 जगे भाट देशराज व सुलतान सिंह कृत रोड़ इतिहास

3.11 डॉ॰ राजपाल सिंह, रोड़ इतिहास की झलक

देखें :- सुलतान सिंह व देश राज कृत रोड़ इतिहास

3.12 जगे भाट राम सिंह 8.12.1967 को प्राप्त निवासी बड़वा जिला जयपुर राजस्थान ।

3.13 डी॰एन॰ कुन्दरा गलिम्पस ऑफ एनसियन्ट इण्डिया हिस्ट्री

देखें :- महर्षि दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश पृ॰ 286

3.14 निहाल सिंह आर्य, सर्वखाप पंचायत का राष्ट्रीय पराक्रम पृ॰ 105

3.15 सौरम रिर्काडस सर्वखाप पंचायत मुजफ्फरनगर यू॰पी॰

देखें :- जगे भाट सुलतान सिंह व देशराज कृत रोड़ इतिहास

3.16 रोहतक गजटीयर वोलुम 3 ए सन् 1910 पृ० 71

देखें :- जगे भाट राम सिंह 8.2.1967 को प्राप्त निवासी बढ़वा जिला जयपुर राजस्थान, देखें- पुलिस इन्सपैक्टर सरदार किसन सिंह गांव कौल की मुकदमा फाइल जमीन 36000 बीघे चार पट्टी।

3.17 डी०एन० कुन्दरा हिस्ट्री ऑफ गलिम्पस इण्डिया।

3.18 नारायण प्रशाद मिश्र-आल्हा खण्ड पृ० 1 से 22

3.19 डॉ० हरिनाथ टण्डन पदमावती समय पृ० 115

3.20 सौरम रिकार्डस सर्वखाप पंचायत मुजफ्फरनगर यू०पी०

देखें :- डॉ० हरिनाथ टण्डन, पद्मावती समय पृ० 18

3.21 जगे भाट सुलतान सिंह व देशराज कृत रोड़ इतिहास

3.22 चौ० मान सिंह रोड़ लाखनौर हस्तलिखित डायरी नं० 91 से

देखें :- माता प्रशाद गुप्त कयमास वध पृ० 40

3.23 हरिहरनाथ टण्डन पदमावती समय पृ० 55

देखें :- माता प्रशाद, कयमाश वध पृ० 20, 23

देखें :- सौरम रिकांडस सर्वखाप पंचायत मुजफ्फरनगर

3.24 विधाधर महाजन दिल्ली सल्तनत का इतिहास पृ० 28

3.25 बी०सी० वैद्य हिस्ट्री ऑफ मिडिवल हिन्दू इण्डिया भाग-II पृ० 19

देखें :- जे०आर०के०एस० बंगाल 5 (1857)

3.26 डॉ० के०सी० यादव कृत हरियाणा का इतिहास खण्ड-11 पृ० 25, 26

3.27 निहाल सिंह आर्य सर्वखाप पंचायत राष्ट्रीय पराक्रम भाग-14, पृ० 102

3.28 निहाल सिंह आर्य सर्वखाप पंचायत राष्ट्रीय पराक्रम, पृ० 103

3.29 निहाल सिंह आर्य सर्वखाप पंचायत राष्ट्रीय पराक्रम, पृ० 105

3.30 देखें :- सौरम रिर्काडस सर्वखाप पंचायत मुजफ्फरनगर

3.31 रोहतक गजटीयर वोलुम III ए सन् 1910 पृ० 71

3.32 डेन्जिल ईब्बेटसन की पुस्तक से

3.33 पंजाब गजटीयर चैपटर III दी ट्राईबस एण्ड कास्ट पृ० 110

3.34 मोहन लाल, विष्णु लाल पाण्डय पदमावती समय पृ० 55

3.35 पार्थ पराक्रम व्यायोम गायकवाड़ ओरियन्टल पृ० 3

देखें :- डॉ० माता प्रशाद गुप्त कयमास वध पृ० 11, 30

3.36 डॉ० सुरेन्द्र सिह कादियाण ज्ञाना माजरा रोड़ दृष्टा से

3.37 प्रो० पी०एन० ओक भारत में मुस्लिम सुलतानों का इतिहास भाग-II पृ० 47

3.38 प्रो० देशराज, हिस्ट्री ऑफ जाटस

3.39 विधाधर महाजन दिल्ली सल्तनत का इतिहास पृ० 26

3.40 सी०पी० वैद्य हिस्ट्री ऑफ हिन्दू इण्डिया भाग-III पृ० 128

3.41 राजपुताना गजटीयर व बिजोलिया शिलालेख

3.42 बुध प्रकाश हरियाणा थ्रो दी एजीज पृ० 39

3.43 चन्द्र वरदाई पृथ्वी राज रासो,नोट-2

देखें :- इतिहासकार फरगुशन

देखें :- सी०पी० वैद्य हिस्ट्री ऑफ मिडिवल हिन्दू भाग-III पृ० 326

3.44 सोम दत्त सम्प्रति भरतपुर (राजस्थान) राजमन्दिर पुरोहित

देखें :- समाज सेवी सूरत सिंह बसताड़ा (ब्रह्मानन्द शिष्य) की डायरी से

3.45 रोड़ कौम के राजभाट देशराज, जयपुर कृत रोड़ इतिहास

देखें :- रतन देव शास्त्री कारखाना, भारतीय इतिहास की रूपरेखा पृ० 26 से 29 तक

3.46 विलियम क्रूक की पुस्तक के अंश जो 1891 ई० की जनगणना

के आधार पर दिए गए।
देखें :- ट्राइब्ज एण्ड कास्ट ऑफ दी नार्थ-वैस्टर्न प्रोविन्सीय एण्ड अवध 1896 ई॰

3.47 विलियम क्रूक ट्राईब्ज एण्ड कास्ट ऑफ दी नोर्थ वैस्टर्न प्रोविनसीस एण्ड अवध, पृ॰ 243, 246
3.48 हेमचन्दरे डाईनैष्टिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पृ॰ 1088-1093
3.49 सौरम रिकार्डस सर्वखाप पंचायत मुजफ्फरनगर (यू॰पी॰)
देखें :- डॉ॰ राजपाल सिंह रोड़ इतिहास की झलक, पृ॰ 45
3.50 निहाल सिंह आर्य सर्वखाप पंचायत राष्ट्रीय पराक्रम, पृ॰ 123
3.51 सौरम रिकार्डस सर्वखाप पंचायत मुजफ्फरनगर (यू॰पी॰)
देखें :- डॉ॰ राजपाल सिह रोड इतिहास की झलक, पृ॰ 45
3.52 निहाल सिंह आर्य, सर्वखाप पंचायत राष्ट्रीय पराक्रम, पृ॰ 127
3.53 सर्वखाप पंचायत सौरम रिर्काडस मुजफ्फरनगर
देखें :- डॉ॰ राजपाल सिंह रोड़ इतिहास की झलक, पृ॰ 46
3.54 निहाल सिंह आर्य सर्वखाप पंचायत राष्ट्रीय पराक्रम, पृ॰ 134
3.55 डॉ॰ के॰सी॰ यादव हरियाणा का इतिहास खण्ड-II, पृ॰ 58, 59
3.56 डॉ॰ राजपाल सिंह रोड़, इतिहास की झलक, पृ॰ 49 (सौरम रिकार्डस)
3.57 सौरम रिकार्डस सर्वखाप पंचायत मुजफ्फरनगर नगर (यू॰पी॰)
3.58 निहाल सिंह आर्य, सर्वखाप पंचायत, राष्ट्रीय पराक्रम, पृ॰ 164
3.59 सौरम रिकार्डस, सर्वखाप पंचायत, मुजफ्फरनगर
3.60 निहाल सिंह आर्य, सर्वखाप पंचायत, राष्ट्रीय पराक्रम, पृ॰ 182
3.61 निहाल सिंह आर्य, सर्वखाप पंचायत, राष्ट्रीय पराक्रम, पृ॰ 177, 178
3.62 देखें :- अबुल फजल की आइन से
3.63 देखें :- अबुल फजल की आइन से

3.64 जोगी दीले राम, गांव अहर के रिकार्डस से
3.65 देखें :- अबुल फजल की आइन से
3.66 जोगी दीले राम, गांव अहर, पानीपत के रिकार्डस से
3.67 अनील बेदाग जनसत्ता का हरियाणा संस्करण, दिनांक 14 मई 1995 ई॰
3.68 निहाल सिंह आर्य, सर्वखाप पंचायत राष्ट्रीय पराक्रम, पृ॰ 194
3.69 निहाल सिंह आर्य, सर्वखाप पंचायत राष्ट्रीय पराक्रम, पृ॰ 263, 264
3.70 प्रो॰ पी॰एन॰ ओक भारत में मुस्लिक सुलतानों का इतिहास।
3.71 निहाल सिंह आर्य, सर्वखाप पंचायत राष्ट्रीय पराक्रम, पृ॰ 271
3.72 निहाल सिंह आर्य, सर्वखाप पंचायत राष्ट्रीय पराक्रम, पृ॰ 272
3.73 निहाल सिंह आर्य, सर्वखाप पंचायत राष्ट्रीय पराक्रम, पृ॰ 276
3.74 दैनिक भास्कर (पानीपत) मंगलवार 18 फरवरी 2003
3.75 राम कृष्ण, मारवाड़ का मूल इतिहास राठौर वंश का परिचय
देखें :- कर्नल टाड का राजस्थान का लेख नं॰ 668
देखें :- चौ॰ ईश्वर सिंह गांव सटौण्डी, एम॰एल॰ए॰ (अध्यक्ष हरियाणा विधान सभा) की डायरी से
3.76 निहाल सिंह आर्य, सर्वखाप पंचायत राष्ट्रीय पराक्रम, पृ॰ 347
3.77 सौरम रिकार्डस, सर्वखाप पंचायत मुजफ्फरनगर (यू॰पी॰)

अध्याय-4

रोड़ वंश : चौहान वंश 968 ई० से 1208 ई० तक

4.1 रोड़ (चौहान वंश) 968 ई० से 1208 ई० तक अमीन गांव (अभिमन्युपुर) के आस-पास रोड़ बिरादरी के चौहान वंश के लगभग 10 गांव आबाद हैं । चौहान वंश के संस्थापक दीप चन्द चौहान को अमीन गांव के इर्द-गिर्द चौरासी गांवों की जागीर सन् 968 ई० को उसके पिता राणा हर राय ने दी थी । रोड़ों में राणा गौत्र के संस्थापक राणा हर राय ही थे । चौहानों का गौत्र दलपते हैं । दीप चन्द चौहान की माता गांव मुहाणा गौत्र महला की रोड़ विरांगना थी ।

चौहान वंश के शासक :

राणा हर राय –रोड़ों में राणा गौत्र के संस्थापक

दीप चन्द चौहान –चौहान वंश के संस्थापक

गुवक्त चौहान

अजय देव चौहान

बीसल देव चौहान

सोमेश्वर चौहान

पृथ्वी राज चौहान III

अभय पाल चौहान

दुर्जन पाल चौहान

उदय पाल चौहान

यश पाल चौहान

4.2 चौहान वंशियों की उत्पत्ति यज्ञों से मानते हैं । इनको अग्नि वंशी भी कहा गया है । ग्वालियर से प्राप्त वि० सं० 900 के आस-पास प्रतिहार भोजदेव की प्रशति के आधार पर चालुक्य

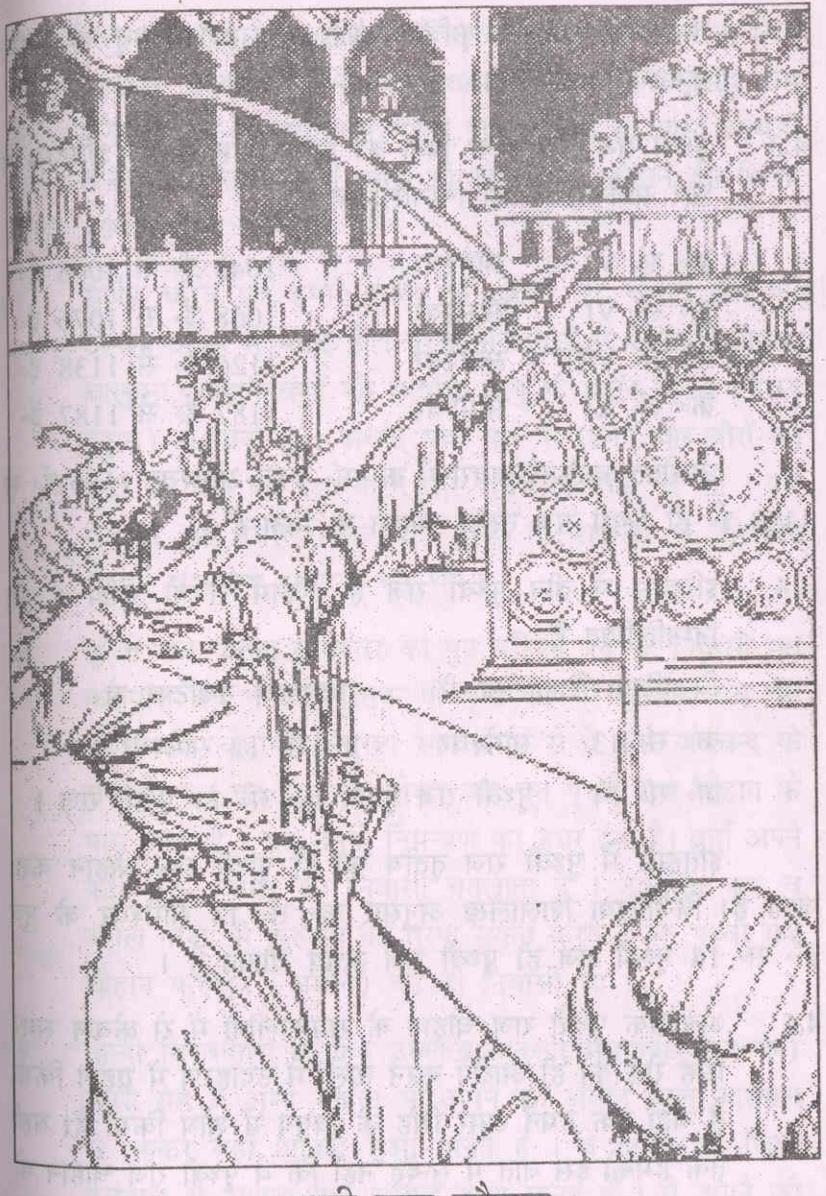

पृथ्वी राज चौहान

चार बास चौबीस गज, अष्ट अंगुल प्रमाण ।
ता उपर सुल्तान है, मत चुके चौहान ।।

तथा चौहान आदि कृत्रिक वंशों की उत्पत्ति आबू के अग्नि कुण्ड से मानी है ।

4.3 पृथ्वी राज चौहान के पिता का नाम सोमेश्वर है । इतिहास में चार सोमेश्वर हैं जो निम्नलिखित हैं :-

क्रं० सं० V	सोमेश्वर	1040 ई० से 1068 ई०
क्रं० सं० VI	सोमेश्वर	1068 ई० से 1076 ई०
क्रं० सं० VIII	सोमेश्वर	1126 ई० से 1138 ई०
क्रं० सं० XI	सोमेश्वर	1182 ई० से 1187 ई०

उपरोक्त चारों सोमेश्वरों में क्रं० सं० VIII सोमेश्वर 1126 ई० से 1138 ई० ही पृथ्वी राज तृतीय चौहान के पिता हैं ।

4.4 इतिहास में तीन पृथ्वी राज हैं, जिनमें से दो मुख्य हैं जो निम्नलिखित हैं :-

बिजोलिया शिलालेख से		राजपुताना गजटिपर से
क्रं० सं० 13	सोमेश्वर	क्रं० सं० 12 सोमेश्वर
क्रं० सं० 14	पृथ्वी राज तृतीय	क्रं० सं० 13 पृथ्वी राज I

इतिहास में पृथ्वी राज तृतीय को ही पृथ्वी राज चौहान कहा जाता है। बिजोलिया शिलालेख अनुसार क्रं० सं० 13 सोमेश्वर के पुत्र क्रं० सं० 14 पृथ्वी राज ही पृथ्वी राज तृतीय चौहान हैं ।

4.5 अब तक पृथ्वी राज चौहान के समकालीनों में से केवल समर सिंह रोड़ को ही आक्षेप करने वालों में उदाहरण में ग्रहण किया है जहाँ तक हमनें समर सिंह के विषय में शोध किया है। वहाँ तक हमको इस बात में सन्देह नहीं कि वे पृथ्वी राज चौहान के बहनोई, सेनापति और समकालीन थे ।

4.6 सौरम रिकार्डस सर्वखाप पंचायत मुजफ्फरनगर के अनुसार 1183 ई० में हरिद्वार में एक सभा का आयोजन किया गया ।

जिसमें विदेशी आक्रमणकारियों से देश की रक्षा करने के लिए 18000 मल्ल योद्धाओं की सजातीय सेना समर सिंह रोड़ सेनापति की अध्यक्षता में पृथ्वी राज चौहान के पास तरावड़ी भेजी थी । तरावड़ी में आज भी पृथ्वी राज चौहान का किला आबाद है।

4.7 सूर्जन चरित्र एवं हमारे काव्य के आधार पर चौहान वंश की उत्पत्ति अग्नि से बताई है । पृथ्वी राज रासों में परमार, प्रतिहार, चालुक्य, चौहान वंशों की उत्पत्ति आबु के अग्नि कुण्ड (हवन कुण्ड) से मानी है । अर्थात् एक यज्ञ के सामने चार वीरों को बैठा कर देश की रक्षा करने बारे शपथ दिलवाई गई थी । इस यज्ञ में रोड़ बिरादरी के दीप चन्द भी शामिल थे, जिन्होंने चौहान वंश की स्थापना की थी ।

4.8 पृथ्वी राज चौहान सोमेश्वर का पुत्र बहिला वन का निवासी था। कयमास वध नामक पुस्तक के पृष्ठ 11 पर गोविन्द राय यह पृथ्वी राज चौहान के मुख्य सामन्तों में से है और जयचन्द के राजसुय यज्ञ का निमन्त्रण लेकर जब दूत पृथ्वी राज चौहान के पास आता है । यह उनके निमन्त्रण का उत्तर देता है। वहाँ अपने को 'कुरु' जंगल का निवासी बतलाता है । उपरोक्त कुरु व जंगल नरेश भी कुरुक्षेत्र की तरफ संकेत करते हैं कि पृथ्वी राज चौहान कुरुक्षेत्र (अमीन) का ही निवासी था ।

4.9 हिन्दी विश्वकोश के एक उल्लेख अनुसार मुरादाबाद (यू०पी०) वासी रोड़ व अन्य चौहान भी अपने को अमीन जिला करनाल से आकर वहाँ आबाद हुआ मानते हैं । वे अपने को जिला करनाल से आकर वहाँ आबाद हुआ मानते हैं । वे अपने को चौहानों की शाखा मानते हैं । उपरोक्त रिपोर्ट अनुसार उत्तर प्रदेश में आबाद चौहान वंश गांव अमीन से ही गये हैं ।

4.10 कलायत राज्य की सीमाएं उन दिनों उत्तर में अल्लवला गांव

उत्तर पश्चिम में क्योड़क जिला कुरुक्षेत्र पश्चिम में घग्घर नदी दक्षिण-पश्चिम में बरसोला, दक्षिण में हाट, अहर, कुराना दक्षिण पूर्व में बड़ौली पूर्व में यमुना नदी और उत्तर में ऊँचा समाना होती हुई करनाल आदि तक विस्तृत थी। इनके उत्तर दिशा में अर्थात् कुरुक्षेत्र में चौहान राज्य स्थापित था। उपरोक्त लाइनें अमीन के इर्द-गिर्द चौहान राज्य को प्रमाणित करती हैं।

4.11 जबसे पृथ्वी राज चौहान ने यह सुना कि उसकी स्वर्ण प्रतिमा दरबान के स्थान पर जयचन्द ने स्थापित की है। इससे पृथ्वी राज चौहान का चित अशान्त रहने लगा था।

उपरोक्त लाइनें पड़ने से मालूम होता है कि पृथ्वी राज चौहान की स्वर्ण प्रतिमा दरबान (पहरेदार) के स्थान पर लगाने का संयुक्ता के स्वयम्बर में किसी भी राजपूत शासक ने विरोध नहीं किया था। इसी का बदला लेने के लिए संयुक्ता को उठाया था। उपरोक्त घटना प्रमाणित करती है कि पृथ्वी राज चौहान कन्नौज के शासक जचयन्द की मौसी का लड़का नहीं था।

4.12 पृथ्वी राज चौहान का जन्म हमीरा काया में चेदी की राजकुमारी कपुरी देवी से इनका जन्म मानकर दिल्ली के राजा अन्नंगपाल की लड़की से इनके जन्म को नकार दिया है। यहाँ पर यह स्पष्ट हो जाता है कि जयचन्द और पृथ्वी राज चौहान मौसेरे भाई नहीं थे।

4.13 पृथ्वी राज चौहान ने हिन्दुओं का आखरी युद्ध पानीपत के मैदान में तरावड़ी में 1191 ई॰ में लड़ा था। तरावडी को तराइन नहीं पड़ना चाहिए।

4.14 गुहीलोटस जो साम्भर के चौहानामास है। इन्हीं चौहानामास को चौहान लिखा है। लेकिन कुछ इतिहासकारों ने इसे नकार दिया है। चौहानों का इतिहास जैसे कैसे भी गुहीलोटस से अलग है

अर्थात् मेल नहीं खाता।

उपरोक्त कर्नल टाड की रिपोर्ट को सि॰पी॰ वैद्य ने नकार दिया है कि साम्भर के चौहानामास को चौहान नहीं मानना चाहिए।

4.15 पृथ्वी राज चौहान का लड़का ताहर जब अपनी बहन बेला का रिस्ता करने जाता है। आला उद्धल-मलखान वगैरा उस पर दबाव डालते हैं कि वह अपनी बहन पृथ्वी राज चौहान की लड़की का रिस्ता मलखन के साथ कर दे। लेनिक ताहर ने रिस्ता करने से इन्कार कर दिया और कहता है कि तुम्हारी जाति बनाफर है जो औछी (नीची) है। मलखान उत्तर देता है जो धर्म-कर्म क्षत्रियों में है। वो हम राजपूतों में भी है। उपरोक्त लाइनों में पृथ्वी राज चौहान के लिए क्षत्रिय शब्द और आला उद्धल-मलखान के लिए राजपूत शब्द का प्रयोग किया गया है।

4.16 पृथ्वी राज चौहान का अपनी लड़की बेला का रिस्ता महोबे वाले मलखान से करने से इनकार करने पर राजदूत राजाओं ने जिनमें जयचन्द आल्हा उद्धल आदि शामिल थे। सबने मिलकर पृथ्वी राज चौहान से लड़ाई करने का निर्णय लिया। पृथ्वी राज चौहान को हराकर उनकी लड़की बेला को जबरदस्ती उठाकर वे मलखान से शादी करेंगे। तमाम राजपूत राजा दिल्ली की और चल पड़े। जब दिल्ली पाँच कोस रह गयी। राजपूतों ने डेरा डाल दिया। अपनी पगडी हाथियों के होदे, घोड़ों की जीन उतार कर रख दी और विवाह के बारे विचार करने लग गये। इस लड़ाई में राजपूत राजाओं की हार हुई। इसी लड़ाई का बदला लेने के लिए पृथ्वी राज चौहान ने जयचन्द पर हमला बोल दिया। उनकी लड़की संयोगिता को जबरी उठा कर ले गया और उनसे शादी कर ली।

उपरोक्त लाइनों में पृथ्वी राज चौहान के साथ क्षत्रिय शब्द और आल्हा-उद्धल के साथ राजपूत शब्द का प्रयोग हुआ है।

4.17 पृथ्वी राज चौहान की कचैहरी लगी हुयी थी। सिहासन हीरे-जवाहारात से सजा हुआ था । पृथ्वी राज चौहानकी गज भर की छाती थी ।उसकी आंख मसाल की तरह लाल थी । दो हजार क्षत्री और बड़े-बड़े सरदार तथा पृथ्वी राज चौहान के सातों बेटे वहाँ बैठे हुये थे । यहाँ भी पृथ्वी राज चौहान व उसकी सेना के साथ क्षत्री शब्द ही प्रयोग हुआ है ।

4.18 दो हजार क्षत्रियों नें महुबे वाले राजपूतों की सेना को घेर लिया और तलवारों से दोनों सेनाओं में काट -मार शुरू हो गयी । आल्हा खण्ड नामकग्रन्थ के अनुसार पृथ्वी राज चौहान की सेना को क्षत्रिय और मलखान वगैरा महुबे वालों की सेना के साथ राजपूत शब्द का प्रयोग किया गया है ।

4.19 रोड़ वंश क्षत्रिय जाति है। जिसका 700 वर्ष पहले अर्थात 12वी शताब्दी अर्थात पृथ्वी राज चौहान के समय एक भव्यशाली इतिहास रहा है ।

उपरोक्त अनुसार क्षत्री शब्द का प्रयोग रोड़ों के साथ व पृथ्वी राज चौहान के साथ प्रयोग हुआ है ।

4.20 उत्तरी भारत में सर्वोच्च राजनैतिक सत्ता हथियाने के उदेश्य से चौहान वंश नें महोबे के चन्देलों, और आबु के परमार और कन्नौज के गड़वालों जयचन्द के राज्यों पर आक्रमण किये ।

4.21 तरावड़ी के मैदान में पृथ्वी राज चौहान की हार हुई थी कन्नौज के राजकुमार जयचन्द नें उत्सव और रंगरलियां मनानी शुरू कर दी ।

4.22 विचारणिय है कि चौहान, परमार, भट्टी, राठौरों नें पंजाब से आकर जैसलमेर व राजस्थान में राज्यों की स्थापना की । उपरोक्त रिर्पोट अनुसार चौहान वंश पंजाब (अमीन जागीर) से जैसलमेर व राजस्थान में गया ।

4.23 पृथ्वी राज द्वितिय की मृत्यु के बाद विशाल हरियाणा में एक भारी उथल-पुथल मची । जिसकी वजय से सोमेश्वर के लड़के पृथ्वी तृतीय नें विशाल हरियाणा-दिल्ली पर अपना कब्जा कर लिया, क्योंकि वह तमाम भारत का एक सम्राट बनने के स्वप्न लिया करता था । पृथ्वी राज तृतीय ही पृथ्वी राज चौहान था ।

4.24 कुतुबद्दीन ऐबक को यह सम्मान इस लिए दिया जाता है कि जब मुसलमानों ने 1208 ई० में रोड़ों पर विजय पाई । उन्होंने इस लोहे की लाठ को एक मस्जिद के कोर्ट यार्ड के मध्य लगा दिया। टूट-फूट का पितल धातु का सामान एक यहुदी को बेच दिया ।

उपरोक्त लाइनों से यह प्रमाणित होता है कि पृथ्वी राज चौहान रोड़ वंशी था ।

4.25 अन्त में लिखा है कि यह स्तम्भ (दिल्ली की लोहे की लाठ) राये पिथोरा अर्थात् पृथ्वी राज चौहान का है । यदि यह ढली हुई धातु से निर्मित होता तो मुसलमान आक्रमणकारी और विजेता इस को भी कमी के खा गये होते । धातु होने के कारण वे इसे तोड़ न सके ।

उपरोक्त तथ्यों के अनुसार चौहानों ने राजस्थान में जाकर राज्य स्थापित किए । पी०एन० ओक ने करनाल के उत्तर में चौहान राज्य होने का वर्णन किया है । हमीरा काया में चेदी की राजकुमारी कपूरी देवी से इनका जन्म माना है । यहाँ पर यकीनी हो जाता है कि पृथ्वी राज चौहान जचयन्द का मौसेरा भाई नहीं था । जे० आर रिकार्ड व सी०पी० वैद्य के अनुसार पृथ्वी राज चौहान ने हिन्दुओं का आखरी युद्ध पानीपत (तरावड़ी) में 1191 ई० में लड़ा था । तरावड़ी में पृथ्वी राज चौहान का किला आज भी मौजूद है । कर्नल टाड ने गुहीलोटस के चौहानामास को चौहान मानकर पृथ्वी राज चौहान को राजस्थान से जोड़ दिया । लेकिन इतिहासकार सी०पी० वैद्य ने टाड के कथन को नकार दिया है और लिखा

है कि चौहानों का इतिहास गुही लोटस से अलग है । तब तो पृथ्वी राज चौहान का जन्म अजमेर में नहीं हुआ था । बिजोलिया के शिलालेख में क्रं॰ सं॰ 13 सोमेश्वर का पुत्र क्रं॰ सं॰ 14 में पृथ्वी राज तृतीय माना है। पृथ्वी राज तृतीय ही पृथ्वी राज चौहान है । जबकि राजपूताना गजटियर में क्रं॰ सं॰ 12 सोमेश्वर का पुत्र क्रं॰ सं॰ 13 पृथ्वी राज प्रथम है । पृथ्वी राज प्रथम पृथ्वी राज चौहान नहीं है । पृथ्वी राज तृतीय व पृथ्वी राज प्रथम दोनों अलग-अलग है । पृथ्वी राज द्वितीय के बाद पृथ्वी राज तृतीय (पृथ्वी राज चौहान) ने पंजाब से जाकर दिल्ली पर अपना अधिकार स्थापित किया । इतिहासकार फरगुशन, चन्द्रवरदाई, सी॰पी॰ वैद्य के अनुसार रोड़ों की हार के बाद मोहम्मद गौरी के गवर्नर कुतुबद्दीन ने लोहे की लाठ को एक मस्जिद में लगाया था । यहाँ पर स्पष्ट हो जाता है कि पृथ्वी राज चौहान की हार ही रोड़ों की हार थी ।

सन्दर्भ

4.1 डॉ॰ गौरी शंकर हिरा चन्द औझा पदमावती समय, पृ॰ 52

II. डॉ॰ राजपाल सिंह रोड़ इतिहास की झलक, पृ॰ 35

III जगे भाट सुलतान सिंह व देशराज कृत रोड़ इतिहास

IV डी॰एन॰ कुन्दरा, गलिम्पस, ऑफ एनसियन्ट इण्डिया

V महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश, पृ॰ 286

VI बन्डारनायक द्वारा बम्बे गजटियर वोलुम II भाग II

4.2 डॉ॰ गौरी शंकर हीरा चन्द ओझा पदमावती समय, पृ॰ 52

4.3 बन्डारनायक द्वारा बम्बे गजटियर वोलुम II भाग II

देखें :- I किलहीरन जनरलनोलीज ई-1 VIII

4.4 बिजोलिया शिलालेख सन् 1226 ई॰

देखें :- I राजपुताना गजटियर से

4.5 मोहन लाल विष्णु लाल पाण्डय पदमावती समय, पृ॰ 55

4.6 सौरम रिकार्डस, सर्वखाप पंचायत, मुजफ्फरनगर

4.7 डॉ॰ दशरथ शर्मा पदमावती समय, पृ॰ 57

देखें :- डॉ॰ हरिहर नाथ पदमावती समय पृ॰ 7

4.8 पार्थ पराकर्म व्यायोम गायकवाड़ ओरियन्टल, पृ॰ 3

देखें :- डा॰ माता प्रशाद गुप्त कयमास वध पृ॰ 11, 30

4.9 डॉ॰ सुरेन्द्र सिंह कादियान ग्याना माजरा (यू॰पी॰) रोड़ दृष्य से

4.10 श्री पी॰एन॰ औक भारत में मुस्लिम सुलतान भाग II, पृ॰ 47

4.11 माता प्रशाद गुप्त कयमास वद्य, पृ॰ 31

4.12 सी॰पी॰ वैद्य हिस्ट्री ऑफ मिडिवल हिन्दू इण्डिया, भाग-III, पृ॰ 321

4.13 जे॰ आर॰ ऐ॰ एस॰ बंगाल वोलुम 5 (1887)

4.14 कर्नल टाड

देखें :-I सी॰पी॰ वैद्य हिस्ट्री ऑफ मिडिवल हिन्दू इण्डिया

भाग-II, पृ० 91

4.15 पं० नारायण प्रशाद मिश्र, आल्हा खण्ड, दिल्ली की लड़ाई, पृ०7

4.16 पं० नारायण प्रशाद मिश्र, आल्हा खण्ड, दिल्ली की लड़ाई, पृ०19

4.17 पं० नारायण प्रशाद मिश्र, आल्हा खण्ड, दिल्ली की लड़ाई, पृ०21

4.18 पं० नारायण मिश्र, आल्हा खण्ड, दिल्ली की लड़ाई, पृ० 22

4.19 प्रो० देशराज, हिस्ट्री ऑफ जाटस

4.20 विद्याधर महाजन, दिल्ली सल्लतनत का इतिहास, पृ० 26

4.21 विद्याधर महाजन, दिल्ली सल्लतनत का इतिहास, पृ० 28

4.22 सी०पी० वैद्य हिस्ट्री ऑफ हिन्दू इण्डिया, भाग-प्प्, पृ० 129

4.23 बुध प्रकाश, हरियाणा थ्रो दी एजीज, पृ० 39

4.24 इतिहासकार, फरगुशन

4.25 धर्मवीर पं० लेखराम आर्य पथिक कुलियात आर्य मुसाफिर, भाग-1, पृ० 49

अध्याय-5

रोड़ वंश : 1761 ई० से 1911 ई० तक

5.1 1764 ई० को एक प्राचीन रोड़ शासक से सम्बन्ध राजस्थानी भाषा में एक अज्ञात लेखक का लेख हिन्दी साहित्य का इतिहास 'अनुशील' नामक पुस्तक में बीजा और सौरठ की बात के रूप में मिलता है । यह रोड़ शासक सम्राट धज उर्फ राजा रोड़ ही था । इनके शासन काल में खुशहाली थी । प्रत्येक व्यक्ति को न्याय मिलता था । आज भी कहावत प्रचलित है। कौन सा तू सम्राट धज है ।

5.2 कितना चौका देने वाला तथ्य सामने आया कि जम्मू में छम्ब जोरिया में 'धान रोड़ान' नामक बस्ती आबाद है । उस बस्ती में रहने वाले रोड़ कहलाते हैं ।

5.3 कैथल के दक्षिण में रोड़ बाराह है या 12 गांवों का एक समूह है जिनका गौत्र टूरण है । गंगा के पार भी इनके 12 गांव आबाद हैं । ये खूबसूरत और लम्बे ताकतवर आदमी है ।

5.4 चौ० सूरत सिंह गांव बसताड़ा समाजसेवी जो जगद्‌गुरु ब्रह्मानन्द शिष्य भी था । उन्होंने रोड़ इतिहास पर खोज की जिसके कुछ अंश उनकी डायरी से संजय सिंह खोखरा गांव दिवालहेड़ी उत्तर प्रदेश द्वारा लेकर एक लेख लिखकर छपवाया गया । जिसके अनुसार चौ० सूरत सिंह रोड़ों के 168 गांवों में गया । रोड़ शासकों के 9 किले मौके पर जाकर देखें । 18 राजाओं के नाम तलाश किए, जिनका वर्णन 5.4 से 5.4.12 तक निम्नलिखित किया गया है ।

5.4.1 गागर सिंह गौत्र महिला जो खटका नगरी का जागीरदार था । यह नगरी दिल्ली से 55 मील दक्षिण पूर्व में स्थित है । यह नगरी सम्राट धज उर्फ राजा रोड़ की राजधानी

भी थी । यह स्थान यमुना के पश्चिम किनारे पर फरीदाबाद-पलवल के पूर्व दिशा में आज भी खण्डरात के रूप में पड़ा है । यहाँ कि जनता इस किले के खण्डरात को राजा रोड़ के किले के नाम से पुकारती है।

5.4.2 चम्पत रोड़ जिन्होंने नारनौल में जन्म लिया । यह नारनौल का शासक था । जब 12वीं शताब्दी के आखिर में चित्तौडगढ़ पर अलाउद्दीन खिलजी का हमला हुआ । चम्पत रोड़ ने 6000 जवान लेकर खिलजी का मुकाबला किया था ।

5.4.3 मंगल सैन रोड़ जो एक विकट योद्धा भी था । वह कुम्भा का राजा था । खिलजी ने जब दूसरी बार चित्तौड़ पर हमला किया। मंगल सैन ने 9000 हजार जवान लेकर खिलजी का मुकाबला किया था । इस हमले में चित्तौड़ खाली करवा लिया गया था। यह घटना 13वीं शताब्दी के आखिर में घटी थी ।

5.4.4 पृथ्वी राज चौहान का जब 12वीं शताब्दी में दिल्ली में राज था। उसका सिप्पेसलार सेनापति सागर सिंह रोड़ था ।

5.4.5 गंगू राम रोड़ राजा हुए । इनका किला आज भी खण्डरात के रूप में हिसार बस स्टैण्ड के पास है ।

5.4.6 माहील रोड़ राजा हुए । इनका पूरा नाम माहील बाघ था। 1208 ई० में बादली के स्थान पर जब कुतुबद्दीन ऐबक और रोड़ों के मध्य बादली में लड़ाई हुई । उस समय यह बादली का शासक था । यह बादली झझर के पास वाली गुलिया बादली थी। इसी लड़ाई में रोड़ों की हार हुई थी । जिस बारे अंग्रेज इतिहासकार फरगुशन के ये शब्द है ।

"इन 1208 आल होन्नर इज डियू टू कुतुबद्दीन फोर लिविंग इट इन फ्रान्ट ऑफ दी मास्क एण्ड इट इन दी सैन्टर ऑफ इटस कोर्ट यार्ड" "वाइल दि मुसलिक कंकरज आफ रोड्ज" सोलड दि कलोजर देयर टू ए जयू फोर दी ब्रास" अर्थात् रोड़ों पर विजय के बाद कुतुबद्दीन ने रोड़ों के राज से उखाड़ कर लोहे की लाठ दिल्ली में एक मस्जिद में लगा दी।

5.4.7 सम्पत सिंह रोड़ राजा हुए । जिनका प्राचीन किला दिल्ली में आज भी मौजूद है जिसमें अजायब घर बना हुआ है ।

5.4.8 चुड़ामल रोड़ इनके राज्य में 83 गांव थे । राजा चुहड़मल रोड़ ने कुतुबद्दीन से तीन युद्ध लड़े । इनका शासन रोहतक में था। इनकी लड़की का नाम शोशीला देवी था ।

5.4.9 बन्दा बहादुर रोड़ राजा था और उनकी सेना में सेनापति कृषि रोड़ था जिसने रूढकी उत्तर प्रदेश को बसाया था।

5.4.10 मुराल रोड़ राजा था । जिसका शासन झांसी से 25 मील पश्चिम की ओर था । यह महला गौत्र का था । इनका भानजा विजय सिंह रोड़ इनकी सेना का सेनापति था । उस समय भरतपुर का राजा जवाहर था । जो जाट था। वह पुष्कर तीर्थ पर स्नान करने गया था । वहाँ पर चौबीस घाट नहाने के थे । लेकिन राजपूतों ने जाट राजा जवाहर को पुष्कर तीर्थ पर स्नान नहीं करने दिया। इसके बाद भरपुर का जाट राजा जवाहर सिंह रोड़ राजा मुराल से मिले फिर राजा मुराल अपने बल पर पुष्कर तीर्थ में जाट राजा जवाहर सिंह को स्नान करवा कर लाये थे ।

भाटों के रिकार्ड मुताबिक झांसी के पास रोड़ आज भी आबाद हैं।

5.4.11 खैदर रोड़ जो विराटगढ़ के राजा थे । उसने 27 युद्ध लड़े । इस राजा के आज भी खण्डहरों के रूप में बहुत से प्रमाण उस स्थान पर स्थापित है ।

5.4.12 रोड़ भारत के आठ राज्यों में बसते हैं । सभी स्थानों पर सभी पुराने खण्डहरों का स्वामी ब्रह्मानन्द के शिष्य सूरत सिंह गांव बसताड़ा स्वयं वहाँ गए और खोज की।

5.5. सन् 1857 ई० की भारत स्वतंत्र करवाने के लिए आई क्रान्ति में रोड़ों का मुख्य योगदान रहा । पानीपत के बांगर में जाटों के 16 बड़े गांव जो नोल्था जैल में थे । पानीपत के बांगर में रोड़ों के 17 गांव जो कुराना जैल में थे । भूमि लगान देने से इन्कार कर दिया । अंग्रेजों के खिलाफ 1857 ई० की क्रान्ति में उपद्रव किये। सरकारी इमारतों को जला डाला । सरकारी सम्पत्ति को लूट लिया और अनेक अंग्रेज अधिकारियों का कत्ल कर डाला। 1857 ई० की क्रान्ति का विशाल हरियाणा में सबसे ज्यादा असर पानीपत के बांगर में पड़ा था । क्योंकि मेरठ शहर से उठी क्रान्ति की लपटों ने पानीपत के बांगर में सबसे ज्यादा असर दिखलाया था । वैसे भी पानीपत को गेट वे ऑफ इण्डिया भी कहा गया है । क्रान्ति के समाप्त होने पर उपरोक्त गांवों के लोगों पर मुकदमें चलाये जुर्मानें किये और अनेक तरीकों से सजाये दी । सन् 1857 ई० को पानीपत के बांगर के 17 गांवों में कुल जनसंख्या 33550 थी । इस विद्रोह के कारण अंग्रेज सरकार ने इन लोगों को बुरी तरह कुचला । ये लोग गांव छोड़ कर जंगलों में दौड़ गए । 22 दिनों के बाद अपने घरों को वापिस लौटे ।

5.6 सन् 1857 ई० की क्रान्ति कौल, कैथल, पुण्डरी, अमीन, असन्ध, पानीपत, लाडवा इत्यादि परगनों के गांव-गांव में क्रान्तिकारी कृषकों ने अंग्रेजी शासन व्यवस्था भंग कर दी। किसानों द्वारा फिरंगियों और उनके आश्रित जमींदारों और महाजनों पर आक्रमण कर जोरदार सिलसिला आरम्भ कर दिया गया, जिससे वे आतंकित हो उठे । उन्होंने राजस्व और पुलिस अधिकारियों को अपने क्षेत्र से खदेड़ दिया । सरकार के वफादारों को आत्म-समर्पण के लिए बाध्य किया गया और कुछ समय के लिए ब्रिटिश शासन के सब चिनह मिटा दिये गये।

5.7 आजादी की लड़ाई 1857 ई० करनाल परगने में जनता ने शत्रु के छक्के उड़ा दिये । कप्तान हयुम के नेतृत्व में भेजी गयी सेना से उन्होंने कदम-कदम पर जमकर युद्ध किए । अन्ततः हयुम को अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा। पानीपत के स्थान पर बड़ा घमासान युद्ध हुआ। सैंकड़ों लोग मारे गये । परन्तु क्रान्ति की ज्वाला सारे क्षेत्र में किसी न किसी रूप में दिल्ली के पतन तक जारी रही ।

5.8 सन् 1857 ई० की क्रान्ति में रोड़ नेताओं ने प्रत्येक सम्मेलन में क्रान्तिकारी भाषण दिए । भूमि लगान न देने बारे वकालत की। ये सभी रोहतक, बहादुरगढ, जैसिया और मुहाणा गांव में की ।

5.9 स्वतन्त्रता आन्दोलन में जिला करनाल में 12 सभायें बुलाई गई। जिनमें कांग्रेसियों द्वारा मांग की गयी । जिनमें कांग्रेसियों द्वारा मांग की गई कि हमारी मांग पूरी की जाये वरना आजादी के लिए युद्ध छेड़ दिया जायेगा । ये सभायें पुण्डरी, रसीना, करनाल बल्ला, सींक और सालवन में हयी ।

5.10 राम रोड़-5 अगस्त 1857 ई० को लखनऊ से आया हुआ एक बधाई पत्र दिल्ली के पब्लिक हाल ऑफ आर्डियन्स में पड़ा

गया। पत्र पर कुदरत अली खान, राजा रिहात सिंह, राजा खान सिंह के हस्ताक्षर थे । लखनऊ में तमाम अंग्रेजों को मार दिया है और कानपुर में अंग्रेजों के 1600 आदमियों का कत्ल कर दिया है । हमें सेखु और राम रोड़ की बहुत जरूरत है । कृप्या सेखु और राम रोड़ को दिल्ली से लखनऊ भेजा जाये ।

5.11 सम्रागी विक्टोरिया ने भारत के राजाओं पर प्रजा के नाम उद्घोषणा में कहा । "मैदाने-ऐ-जंग में 1857 ई० की बगावत को कुचल देने से हमारी ताकत का इजहार हो चुका है । अब उन लोगों के अपराध क्षमा करके जो भी अब फोरन अमल को लौटना पसन्द करे । हम अपनी मेहरबानी का इजहार करना चाहते है । इस उद्घोषणा को क्रियान्वित करते हुए हरियाणा का शासन सूत्र भी देश के अन्य भागों की तरह कम्पनी सरकार से हटकर सीधे ब्रीटिस सम्रागी एवं पार्लीयामेन्ट के हाथों में आ गया । अब 1858 ई० के एकट-38 के अनुसार यह विशाल हरियाणा-पंजाब में शामिल किया गया ।"

5.12 रोड़ी शंकर शहर-सम्राट धज उर्फ राजा रोड़ ने सिन्ध की धरती पर अर्थात् पंजाब देश में सिन्ध की धरती पर रोड़वाल शहर बसाया । जिसको अब रोड़ी शंकर भी कहते हैं ।

5.13 सन् 1881 ई० में ब्रिटिश टैरीटरी में 97 आदमी नेटिव स्टेटस में एक आदमी तथा प्रोबीन्सीज में 98 आदमी पढ़े-लिखे थे । इंग्लिश भाषा में वो भी ब्रिटिश टैरीटरी में एक आदमी पढ़ा लिखा था । अर्थात् तमाम भारत में 197 रोड़ पढ़े लिखे थे । लेकिन औरत कोई भी पढ़ी लिखी नहीं थी ।

5.14 मिल्ट्री एण्ड डोमीनैन्टस अर्थात् सेना प्रधान एबस्ट्रैक्ट 84 सन् 1881 ई० और 1891 के अनुसार भारतीय सेना के एक ग्रुप में भर्ती होने वाली कौमें निम्नलिखित थी । दाउद पोत्रा, डून्ड, डागर, गक्कड़, गारेखा, गुर्जर, जाट, राजपूत व रोड़ (ग्रुप एक

मिल्ट्री) अंग्रेजों ने भारत की लगभग 3600 कौमों में से केवल नौ कौमों को ही सबसे अच्छे सैनिक व अफसर देने वाली कौमे माना है । इन कौमों में रोड़ भी एक कौम है । यह रिपोर्ट उस समय की है जब पाकिस्तान व बंगला देश भी भारत में शामिल थे ।

5.15 रोड़ हिन्दू है इनमें सिआर 1881 पैरा 484 के अनुसार रोड़ों की आबादी जिला करनाल में 41431 थी जिनमें 23121 आदमी तथा 18310 औरतें थी । सन् 1881 ई० से 1891 ई० के मध्य कुछ रोड़ रोहतक, दिल्ली व जीन्द स्टेट व अम्बाला से आकर करनाल में आबाद हुए । इनका मुख्य पेसा खेती बाड़ी था । उपरोक्त रिपोर्ट से प्रमाणित होता है । 1881 ई० से पहले दिल्ली, रोहतक, अम्बाला में बड़ी मात्रा में रोड़ आबाद थे ।

51.6 रोड़ों का वास्तविक स्थान कुरुक्षेत्र के दक्षिण में महान डाक का जंगल था । अम्बाला जिले की सीमा पर करनाल में रोड़ों के चौरासी गांव आबाद थे । जिनमें बड़ा गांव अमीन था । अमीन वो स्थान था जहाँ पर पाण्डवों ने कौरवों से आखिरी लड़ाई लड़ने के लिए अपनी सेना इकट्ठी की थी । अमीन से पहले इस गांव का नाम अभिमन्युपुर था । यमुना के पश्चिम दिशा में भी रोड़ आबाद है । गंगा पार रोड़ों के 12 गांव आबाद है । ये खूबसूरत, लम्बे, ताकतवर जवान है । इनकी औरतें खेतों में काम करती है । अम्बाला में निम्नलिखित रोड़ सन् 1883 ई० में आबाद हैं । सगवाल 1848 खींची-1207, मेपला-1567, जगरान-1183 है ।

5.17 तहसीलों के रिकार्ड अनुसार सन् 1881 ई० में रोड़ वंश के कबीले (ट्राईब्ज) जो खेती बाड़ी करते थे ।

रोहतक	1 रोहतक	8 कबीले
	2 सांपला	399 कबीले

दिल्ली	1	सोनीपत	727 कबीले
	2	बल्लभगढ़	1 कबीला
करनाल	1	करनाल	10812 कबीले
	2	पानीपत	5610 कबीले
	3	कैथल	14392 कबीले
अम्बाला	1	अम्बाला	67 कबीले
	2	जगाधरी	71 कबीले
	3	नारायणगढ़	10 कबीले
	4	पिपली	1945 कबीले
होशियारपुर	1	दशहीया	10 कबीले
मोन्टगुमरी	1	गगरा	25 कबीले
	2	पाकपटान	7 कबीले
लाहौर	1	चुन्नीयान	2 कबीले

उपरोक्त अनुसार सन् 1881 ई॰ के तहसीलों के रिकार्ड के अनुसार जिला रोहतक, दिल्ली, करनाल, अम्बाला, होशियारपुर, मौन्ट गुमरी व लाहौर में रोड़ वंश के 43086 कबीले (ट्राईब्ज खेती बाड़ी करते थे) ।

5.18 सैन्सस रिपोर्ट 1911 ई॰

	आदमी	औरत	आदमी (सिक्ख)	औरत	कुल जोड़
पंजाब प्रांत	22735	17962	164	138	40999
ब्रिटिश टैरीटरी	22067	17416	163	139	39785
दिल्ली डिवीजन	22167	17316	163	137	39983
करनाल	21759	17177	160	140	39236
दिल्ली शहर	263	211	–	–	474
रोहतक शहर	5	5	–	–	10
अम्बाला शहर	40	23	–	–	63
जलन्धर	1	–	–	–	1

लुधियाना	1	–	–	–	1
लाहौर	4	5	2	2	13
सियालकोट	–	–	1	1	2
लौहारू (भिवानी)	–	–	–	–	–
दुजाना (रोहतक)	–	–	–	–	–
पटौदी (गुड़गांव)	668	540	–	–	1208
शिमला (हिमाचल)	6	3	–	–	9
कपूरथला	6	2	–	–	8
पटियाला–जीन्द	–	–	–	–	–
नाभा	656	541	–	–	1197
कुल जोड़					1,63,226

उपरोक्त रिपोर्ट अनुसार 1911 ई॰ में रोड़ वंश की जनसंख्या एक लाख तरेसठ हजार दो सौ छब्बीस थी । उपरोक्त रिपोर्ट में पंजाब प्रान्त में 40999 रोड़, ब्रिटिश टैरीटरी में 39785 रोड़ दिल्ली डिवीजन (रोहतक) में 39983 रोड़, करनाल जिले में । (पानीपत-करनाल-कैथल-कुरुक्षेत्र) 39236 रोड़ आबाद थे ।

5.19 रोड़ राज्य – राजस्थान में रोड़ प्रदेश बारे काफी सामग्री उपलब्ध हुई है । सिंह के पुत्र सिंह बाहु हुए जिन्होंने इस राज्य की स्थापना की । सिंहबाहु के पुत्र विजय ने निम्नलिखित रियासेत स्थापित की ।

क) भरेह रियासत जिला इटावा (यू.पी.)

ख) रुरू और भीखरा के राज्य

रोड़ वंश के संस्थापक सरदार महाबाहु के पुत्र वीर रुरू के नाम पर ही इस राज्य का नाम रखा गया होगा । जिला इटावा (यू॰पी॰) में आज भी रोड़ आबाद हैं ।

5.20 जिला इटावा में रोड़ उत्तर प्रदेश के जिला बुलन्द शहर मौहला आजादपुर जिला बांस बरेली में मौहल्ला सुभाष नगर गांव बरवीन जिला बदायुं के गांव अम्बिकापुर में आबाद रोड़ों से

मिलने पर पाया कि वो उत्तर प्रदेश के जिला इटावा रियासत भरेह से लगभग 400 वर्ष पहले आकर यहाँ आबाद हुए ।

5.21 विश्नोई मत में लोहम रोड़ – विश्नोई मत के संस्थापक जम्बेश्वर का जन्म 1450 ई० में राजस्थान के पीपासर गांव में हुआ, जिन्होंने 29 विश्नोई नियम बनाये । इनकी पालना करने वाले विश्नोई बनें । रोड़ों का एक गौत्र लोहम सिरसा जिले में विश्नोईयों में शामिल हो गया । यह गौत्र लोहम रोड़ के नाम से पुकारा जाता है ।

5.22 रोड़ वंश के सामाजिक रीति-रिवाज, सामाजिक रीति-रिवाजों में रोड़ अन्य जातियों जैसे जाट, अहीर, गुर्जरों की भाँति ही है। ये आपस में विवाह शादियों में इकट्ठा खाते हैं व हुक्का भी पीते हैं । करेपे के विषय में ये सभी अन्य जातियों से ऊपर है ।

5.23 रोड़ मुख्यत: इन्द्री, नरदक व कैथल तहसील में आबाद है।

5.24 सिरसा जिले में रोड़ -सिरसा जिले के शहर ऐलनाबाद में आबाद रोड़ अपने नाम के साथ रोड़ लगाते हैं ।

5.25 पुराणों में रोड़ वंश के गांव – पुसण और एपीक सात जंगलों का वर्णन करते हैं । जो कयमाकवना, आदित्यवना, वासवना, फाल्कीवना, सूर्यावना और सितावना जिनके आधुनिक नाम कमोदा, अमीन, बसतली, फरल, सजूमन, मोहाना और सिवाना है।

5.26 इतिहास के थपेड़ों, निरन्तर चलने वाली लड़ाइयों तथा दिल्ली लाहौर के बीच हुए आक्रमणों को झेलते-झेलते रोड़ समुदाय रसातल में चला गया । केवल कृषि एवं पशु पालन के व्यवसाय को अपना कर अपनी धरोहर और अलग पहचान को अब तक संजोये सुरक्षित बनाए हुए है ।

5.27 राजपूतों की उत्पत्ति 747 ई०- सन 747 ई० को राज पुत्रों

(राजपुतों) को क्षत्रियों का दर्जा दिलवाया गया । एक ऐतिहासिक परम्परा के आधार पर सन् 747 ई० को माऊन्ट आबु पर्वत पर एक अग्नि धार्मिक अनुष्ठान (यज्ञ) मनाया गया, जिसमें तमाम राजपूत कुलों (गौत्रों) को अग्नि (यज्ञ) के सामने पवित्र कर-कर क्षत्रियों का दर्जा दिलवाया गया ।

5.28 जब ये राजपूत गौत्र के लोग बारबेरियन्स से आर्थोडोक्स क्षत्रियों में शामिल हो गये । इन्होंने ब्राह्मण पुरोहितों के गौत्र स्वीकार कर लिए ।

क्र०	प्रान्त	राजपूत परिवार	गौत्र	पुरोहित गौत्र
1.	उदयपुर व झुन्नारपुर	गुहीलोठ	बैजवाया	समन्याना
2.	जोधपुर, रतलाम	राठौर	गौत्तम	भारद्वाज
3.	जयपुर, अलवर	काचावहा	मानव	वत्स
4.	बुंदी, कोटा	चौहान	वत्स	वत्स
5.	बिजोलिया, पुरुनारा उदयपुर		वशिष्ठ	वत्स

5.29 रोड़ 1192 ई० के बाद – पूर्व मध्य कालीन विशाल हरियाणा के इतिहास में जिस समय रोड़ों के भाग लेने के प्रमाण मिलते हैं। उस समय उनमें से कुछ तात्कालिक शासकों के अधीन जागीरदार बने मिलते हैं । परन्तु मध्यकाल के इतिहास में इन जागीर दारों की संख्या व महत्त्व सीमित ही रहा लगता है । क्योंकि तरावड़ी के दूसरे युद्ध 1192 ई० अर्थात् पृथ्वी राज चौहान के तरावड़ी के युद्ध के पश्चात् रोड़ों का इतिहास ग्राम व्यवसाय का इतिहास है।

5.30 रोड़ वंश के गांव रोड़ वंश के गांवों बारे लिखा है । ये ग्राम समुदाय छोटे-छोटे गणराज्यों की भाँति हैं । इन पर किसी का

बाह्य दबाव अथवा नियन्त्रण नहीं है । ये अपना सब काम स्वेच्छा से एवं स्वतन्त्र रहकर करते हैं । ये शताब्दियों से अपने आप को अक्षुण्य बनाए चले आ रहे हैं ।

5.31 सन् 1857 ई० की क्रान्ति - थानेसर में 52% रोड, राजपूत, जाट, सैणी, गुर्जर महत्वपूर्ण जातियां थी । इन तमाम लोगों ने जब यह सुना कि मेरठ व दिल्ली में 1857 ई० की क्रान्ति फैल गई है। इन्होंने विद्रोह का बिगुल बजा दिया ।

5.32 रोड़ और सैणी - दूसरी महत्वपूर्ण किसान जाति रोड़ और सैणी थी । इस जाति के 2% किसान करनाल और कुरुक्षेत्र में है । जहाँ इनके चौरासी गांव आबाद हैं ।

5.33 अमीन गांव - अभिमन्युपुर गांव के ठाकुर जी के मन्दिर में जो सूरज कुण्ड के पश्चिम किनारे पर हे । इसमें कुषाण युग का पिल्लर है। जिसकी बनावट मौर्य सम्राज्य के सिक्कों से मिलती है।

5.34 दुर्ग खंगड़ रोड़ - आगरा के पास वास्तविक पुरातात्विक खोज के आधार पर यह सिद्ध हो चुका है कि रोड़ वंश के शासक खंगड़ रोड़ क्र० सं० 89 द्वारा नवस्थापित दुर्ग का नाम खंगड़ रोड़ था । जिसके अवशेष आज भी कगरोल में देखे जा सकते है।

5.35 खटका नगरी, बादली, खेड़ागढ़, तिसमानगढ़, कसोन्दीगढ़ तथा खंगड़ रोड़ इत्यादि ऐतिहासिक रोड़ों द्वारा स्थापित नगर व किले अब खण्डहरों के रूप में होते हुए भी अपने संस्थापकों का इतिहास पुरातात्विक अवशेषों के रूप में जीवित रखे हैं।

5.36 रोड़ वंश महाभारत काल से सर्व प्रथम ये बात सिद्ध हो जाती है कि वे महाभारत काल (उत्तर वैदिक काल) में रोड़ वंशी राजा हस्तिनापुर, मथुरा, विराटनगर, के शासकों से निकटस्थ एवं सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने में सफल हुए थे । मथुरा के

सुरसेन वंशी शासक के साथ तालमदेव क्र० सं० 29 की पुत्री का विवाह हुआ और तालमेदव की पुत्री का विवाह विराट नगर के शासक के साथ हुआ ।

5.37 सैन्सस रिपोर्ट 1881 व 1911 ई० सैन्सस रिपोर्ट 1881 ई० व 1911 ई० के अनुसार करनाल की आबादी 39236 है । जबकि इसी रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली डिवीजन (रोहतक) की रोड़ों की आबादी 39983 है । जिला करनाल (जिससे पानीपत, करनाल, कैथल, कुरुक्षेत्र) में आबाद रोड़ों की आबादी से दिल्ली डिवीजन (रोहतक) में रोड़ों की आबादी 747 व्यक्ति अधिक हैं। जबकि इस समय रोहतक में (सोनीपत) में ही मुहाणा, तिहाड़ गांवों में रोड़ आबाद है। सन् 1881 ई० व 1911 ई० की सैन्सस रिपोर्टों में जिला रोहतक में जो रोड़ों की आबादी थी । रोड़ों की वो आबादी आज किस हाल में है । इसके लिए जरूरी हैं कि रोड़ों के गौत्र सगवाल महला जगलान, खोखरा, कादियाण, बेनिवाल को जाट भूमि रोहतक में 1881 ई० से पहले ढुंडना चाहिए, जिससे रोड़ों की लुप्त आबदी 39983 जो सन् 1911 ई० की सैन्सस में थी कि जानकारी हासिल हो सकती है ।

5.38 1911 ई० की सैन्सस रिपोर्ट के अनुसार लोहारू (भिवानी) दुजाना (रोहतक) पटोदी, (गुड़गांव में रोड़ों की आबादी 1208 है । उस बारे खोज की जरूरत है ।

5.39 पंजाब प्रान्त में रोड़ों की आबादी सन् 1911 ई० को 40999 है। करनाल में रोड़ों की आबादी उसी समय 39236 है । अम्बाला के आस-पास रोड़ों बारे जानकारी हासिल करना जरूरी है। क्या वे सिख तो नहीं बन गये ।

5.40 थानेसर के रोड़ जो उस स्थान पर आबाद है । जहाँ पर महाभारत का महान युद्ध लड़ा गया था ।

5.41 पंजाब प्रान्त के जिला होशियारपुर में रोड़ों के 16 गांव आबाद है। सरदार सोहन सिंह से ज्ञात हुआ । लगभग 100 वर्ष पहले ये रोड़ सिक्ख बन गये । जो रोड़ सिक्ख कहलाये जाने लगे । पंजाब बनने के बाद राय सिक्ख कहलाते हैं । भारत की तहसीलों का रिकार्ड 1881 ई० व सैन्सस रिपोर्ट 1911 ई० में भी पंजाब में रोड दिखाये गये है । 1911 ई० को करनाल पानीपत-कैथल में आबाद रोड़ों की जनसंख्या 39236 थी । जबकी पंजाब में 1911 ई० की सैन्सस रिपोर्ट में रोड़ों की आबादी 40999 थी अब नहीं है ।

5.42 पंजाब प्रान्त के जिला पटियाला में जैलों वगैरा रोड़ों के गांव आबाद थे । यहां से आकर चार परिवार गांव खानपुर जिला कुरुक्षेत्र में आबाद हो गये । शेष वहाँ पर राय सिक्ख बन गये।

5.43 अंग्रेज इब्बेटसन रिपोर्ट नं० 55 दि रेसीज कास्ट एण्ड ट्राईब्ज दि पंजाब इन 1883 पृ० 260 के अनुसार पंजाब प्रान्त के जिला अम्बाला में सगवाल, मेपला, खिची और जगरान इन चार गौत्रों के 5805 रोड़ आबाद थे । ये चारों गौत्र आज अम्बाला जिले में आबाद सिक्खों के हैं ।

5.44 गढ़-कुण्डार :-सन् 1182 ई० को अन्तिम चन्देल राजा परमाल ने पृथ्वी राज चौहान के दुर्ग सिरसागढ़ पर हमला बोल दिया । क्योंकि पृथ्वी राज चौहान ने अपनी लडकी बेला का रिस्ता परमाल के भाई मलखान के साथ करने से यह कहकर इनकार कर दिया कि तुम बनाफर हो तुम्हारी जाति हमसे छोटी है। बुन्देल खण्ड का शासक परमाल जो चौहान की पुत्री बेला का अपहरण करके अपने भाई मलखन के साथ शादी करना चाहता था । 1182 ई० को पृथ्वी राज चौहान का सेनापति खेत सिंह खंगार (खरंगड़) ने अन्तिम चन्देल शासक परमाल को पहूज नदी सिरसागढ़ पर हराकर बुन्देल खण्ड आधुनिक झांसी पर

कब्जा कर लिया । पृथ्वी राज चौहान ने खेत सिंह खंगार को झांसी का जागीरदार बना दिया । 1182 ई० से 1288 ई० तक 106 वर्ष पांच राजाओं खेत सिंह खंगार, कैमास खंगार, चामुण्डय खंगार, कान्ह खंगार, हुरमत सिंह खंगार रोड़ शासकों ने गढ़ कुण्डार पर शासन किया ।

5.45 बिहार राज्य के जिला मधुबनी गांव मधेपुर में खोज के दौरान पाया कि वहाँ पर ख-रोड़ जाति के लोग आबाद हैं । वे सभी अच्छे जमीदार है, शारीरिक ढांचा (शारीरिक बनावट) आम बिहारी से अलग और खूबसूरत है । यह पहले भी प्रमाणित हो चुका है । जगे भाटों के रिकार्ड अनुसार सम्राट धज उर्फ राजा रोड़ का पुत्र कर्धमान गोरखपुर व गोण्डा जिलों में चला गया । जहाँ पर उनके 84 गांव आबाद है ।

फैजा बाद से पटना तक मह-रोड़ वंश के बहुत अधिक गांव आबाद है ।

5.46 जगद्गुरु ब्रह्मानन्द-मोहन आश्रम हरिद्वार में आर्य समाज की विचारधारा रखने वाले वीर सत्यदेव ब्रह्मचारी ने 'अखिल विश्व साम्यवाद स्वतन्त्रता दल' की स्थापना की । घर-परिवार छोड़ कर सन् 1922 ई० से 1947 ई० तक केशरी ज्वज के नीचे आजादी की लड़ाई लड़ते रहे । इनके जोशीले भाषणों के कुछ अंश-धर्म अधर्म की जंग छिड़ी है । सन् 1-1-1947 को केंशरी ध्वज के नीचे गुरुकुल ओ३म् पुरा की स्थापना की । भारत को स्वतन्त्र कराने के बाद इस केशरी ध्वज को जिसके मध्य में ओ३म् लिखा हुआ है । रोड़ बिरादरी को समर्पित कर दिया । एकता व क्रान्ति का प्रतीक यह ध्वज रोड़ धर्मशालाओं पर लहरा रहा है । इसके बाद सफेद वस्त्र धारी ऋषि ब्रह्मानन्द ने केशरी ध्वज के स्थान पर पंचरंगा ध्वज धारण किया । 1.1.1947 से 3-4-1973 तक देशी घी के 195 भण्डारे दिए, यज्ञ किये । उन सब स्थानों पर आश्रम स्थापित किए ।

सन्दर्भ

5.1 जगे भाट सुलतान सिंह व देश राज कृत रोड़ इतिहास

5.2 चौ॰ श्याम लाल रोड़ यू॰पी॰ स्मारिका 1994 से पृ॰ 24

53. गलोजरी ऑफ ट्राइब्ज एण्ड कास्ट ऑफ दी पंजाब नोर्थ वैस्ट फ्रान्टीयर प्रोविन्सज, पृ॰ 334

5.4 आगे 1 से 12 तक चौ॰ संजय सिंह खोखरा गांव दिवालहेड़ी यू॰पी॰ 'रोड वंश' नामक लेख से जो चौ॰ सूरत सिंह गांव बस ताड़ा की डायरी के आधार पर है ।

5.5 पंजाब गजटियर पर चैपठर 11 बी पोलीटीकल हिस्ट्री दि मुटीनी 1857, पृ॰ 47, 115

5.6 बाल कृष्ण मुजतर कुरुक्षेत्र पोलीटिक्ल एण्ड कलचरल हिस्ट्री, नई दिल्ली 1978, पृ॰ 94, 95

5.7 डॉ॰ के॰सी॰ यादव हरियाणा का इतिहास खण्ड III, पृ॰ 85

5.8 जगदीश चन्द्र पोलीटिक्स डिवलोपमेन्ट इन हरियाणा 1928 ई॰ से 1947 ई॰

5.9 जे॰एन॰ यादव हरियाणा स्टडीज इन हिस्ट्री एण्ड पोलीटिक्ल, पृ॰ 117

5.10 सि॰टी॰ मैटकाफ रैजीडेन्ट ऑफ, दिल्ली, 5 अगस्त 1857 दिन मुटिनी इन दिल्ली, पृ॰ 183

5.11 एच॰डी॰ राबर्टसन डिस्ट्रीकट डयूटीज डयूरिंग दि रिवोल्ट, ऑफ इण्डिया इन 1857, पृ॰ 135

5.12 डॉ॰ राजपाल सिंह रोड़, इतिहास की झलक, पृ॰ 20

5.13 पंजाब एण्ड इटस फियुडेटरिज भाग-I दि रिपोर्ट ऑफ दी सैन्सस, 1881 एबस्ट्रेक्ट 61

5.14 पंजाब एण्ड इटस फियूडेटरिज भाग-I दि रिपोर्ट आफ दी सैन्सस 1881 व 1891 एवस्ट्रैक्ट नं॰ 84

5.15 पंडित हरिकिशन कौल सैन्सस ऑफ इण्डिया 191 वोलुम XIV पृ॰ 474,
देखें :- सि॰ आर 1881 पैश्रा 484

5.16 ईब्बेटसन रिपोर्ट नं. 55 दि रेसीज कास्टस एण्ड ट्राईब्ज ऑफ दी पंजाब इन 1883, पृ॰ 260

5.17 पंजाब एण्ड फियुडेटरिज भाग-I दि रिपोर्ट ऑफ दी सैन्सस एबस्ट्रैकट 85 एग्रीकल्चर ट्राईब्ज़ तहसील रिकार्ड सन् 1881
एग्री कल्चरल ट्राईब्ज बाई तहसील एबस्ट्रैक्ट-55

5.18 दि रिपोर्ट ऑफ दी सैन्सस कास्ट एण्ड ट्राईब्ज सैन्सस ऑफ इण्डिया, पृ॰ 282, सन 1911

5.19 ईश्वर सिंह भडाढ, राजपूत वंशावली, पृ॰ 35

5.20 जानकारी लेखक के व्यक्तिगत भ्रमण से प्राप्त

5.22 सर एडवर्ड मैकलागन गलोजरी ऑफ दा ट्राईब्ज एण्ड ऑफ पंजाब नार्थ फ्रान्टीयर प्रान्त, पी॰पी॰-13

5.23 पंजाब डिस्ट्रीकट गजटीयर वोलुम VI ए ट्राईब्ज डिस्ट्रीब्यूसन 1918 ई॰, पृ॰ 8

5.25 डॉ॰ बुध प्रकाश गलिम्पस ऑफ एनसिन्ट हरियाणा वमन पुराण XVII 16

5.26 श्याम लाल रोड, यू॰पी॰ स्मारिका, पृ॰ 24

5.27 दि हिस्ट्री ऑफ इण्डिया बाई हरमन कुलके एण्ड डाईटमार रोथर मुण्ड, पृ॰ 117, पब्लिसड आस्ट्रेलिया, लन्दन, दिल्ली आदि

5.28 सी॰वी॰ वैद्य हिस्ट्री ऑफ मिडिवल हिन्दु इण्डिया भाग-II, पृ॰4

5.29 डॉ॰ राजपाल सिंह रोड़ इतिहास की झलक, पृ॰ 75

5.30 डॉ॰ के॰सी॰ यादव हरियाणा का इतिहास, पृ॰ 189

5.31 केयस एण्ड मैलसन वोलुम VI पी 139 फोरन सिक्रेट कंन्शूलेशन नं. 162-3-25 जून 1857 मैक एन्ड्रीयू ने भारत सरकार को

सूचना ।
5.32 के॰सी॰ यादव रिवोल्ट ऑफ 1857 ई॰ इन हरियाणा, पृ॰ 6
5.33 जे॰एन॰ सिंह यादव हरियाणा स्टडीज इन हिस्ट्री एण्ड पोलटिक्स, पृ॰ 6
5.34 आर्कल्योलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया रिपोर्ट फोर दी इयर 1871-72, वोलुम-4
5.35 आर्कल्योलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया रिपोर्ट फार दी यार 1871-72 वोलुम-4
5.36 डॉ॰ राज पाल सिंह रोड़ इतिहास की झलक, पृ॰ 31
जगे भाट सुलतान सिंह व देशराज कृत रोड़ इतिहास से
5.37 दि रिपोर्ट ऑफ दी सैन्सस कास्ट एण्ड ट्राईब्ज सैन्सस ऑफ इण्डिया, पृ॰ 282 सन् 1911 ई॰
5.38 – Do –
5.39 – Do –
5.40 लैण्ड, आफ दी फाईव रिवर्ज दि ट्राईब्ज सि॰ नं॰ 68, पृ॰ 327
5.41 सैन्सस रिपोर्ट व तहसील रिकार्ड सन् 1881 ई॰ 1911 ई॰
5.43 ईब्बेटसन रिपोर्ट नं॰ 55 दि कास्ट एण्ड ट्राईब्ज इन 1883, पृ॰ 260
5.44 वृन्दावन लाल वर्मा का गढ़ कुण्डार ऐतिहासिक उपन्यास से
5.45 रघुनाथ सिंह शेखावत, राजपूत इतिहास
-डॉ॰ राजपाल सिंह, रोड़ इतिहास की झलक, पृ॰ 94
-जगे भाट सुलतान सिह तथा देशराज हस्तलिखित इतिहास
5.46 जगद्‌गुरु ब्रह्मानन्द कृत यज्ञानुक्रमणिका पृ॰ 12, 25, 62

अध्याय-6

रोड़ वंश के गोत्र

रोड़ो में 126 गोत्र हैं । जिनमें उपलब्ध गोत्र निम्नलिखित हैं ।

1. महला गोत्र :- गद्दी उदयपुर, धर्मक्षत्रिय, इनका निकास प्रयाग राज से खटका नगरी से बादली से मोहाणा, गन्देवड़ा डलावली, जडोला, नैण, उपलाणी, संगरोली, मैहमदपुर, बड़सालु भैणी कला, कुछपुरा, जैदपुरा, खानपुर, मिर्जापुर लोहारी , तिहाड़ रोड़ माजरा, आहुं, सांच, दिवालहेड़ी, सिद्धपुरा, रांघडवाला पांडो खेड़ी, बेलड़ा, अहमदपुर ग्याना माजरा, रावली, गुढ़ा, तथा कारखाना में आबाद हो ये । राजा महलसी के नाम से रोड़ों का महला गोत्र हुआ ।

2. खिंची गोत्र :-गद्दी जयपुर, नगर धर्म क्षत्रिय इनका निकास अजमेर से डीडवाना से नरार से झोझरू से गांव अहर शेरा,,बजीदा मुनारेहड़ी,बराणी,ब्राह्मण माजरा शामगढ़ खलीला, बेलड़ा, बेलड़ी, तथा बलड़ी में आबाद हो गये । 1248 ई॰ को जीत सिंह के दो बेटे देवा सिंह व धूप सिंह झोझरू से गांव अहर आ गये । गांव अहर में राम धन रोड़ पहले से आबाद था । उनकी लड़की किरपी जिन्होने सिर पर पानी का भरा हुआ घड़ा लिये हुये दोडती हुई भैस को पकड रोक लिया था । देवा सिंह ने राम धन रोड़ की लड़की से शादी कर ली । रामधन रोड़ अपनी लड़की को गांव अहर दान में देकर आप गांव बन्दराणा में आबाद हो गया ।

3. समधान गोत्र :-गद्दी हरिणा धर्मक्षत्रिय, जैसेलमेर से कगरोल खेड़ा से बादली से 1208 ई॰ को करेला झमेला से सांवत खेड़ा से चुहड़माजरा, में सन 1468 ई॰ को आबाद हो गये । यह गोत्र चुहड़माजरा , सालवन, जाम्बा, शिमला रोड़ान, छोटी भैणी, खानपुर, लुहारी मिर्जापुर, मोहड़ी में है । चन्द्र वंश श्री कृष्ण

भगवान के बेटे प्रदुमन से ग्यारह पीढ़ि गुजरने पर श्याम दास लखीवाल शहर से उठकर बादली में आबाद हो गया । श्याम दास के नाम पर रोड़ों का समधान गोत्र कहलाया ।

नोट :-रोड़ वंश के गुरू' जगत गुरू ब्रह्मानन्द' व इस पुस्तक के लेखक राम दास रोड़ इसी गोत्र से हैं ।

4. जोगरान गोत्र :-गद्दी उदयपुर, धर्म क्षत्रिय, इनका निकास बादली से कुराना, टाण्डा, सांभली, लुहारी, हसनपुर मे आबाद हो गये । 1283 ई० को रामधन रोड़ अपने दो पुत्रों जगरान और जुगलाल को लेकर गांव कुराना में आया । जगरान की सन्तान गांव कुराना में आबाद हो गई । जिनका गोत्र जगरान से जोगरान कहलाने लगा । इनके दुसरे पुत्र जुगलाल की सन्तान जागलान गोत्र के जाट कहलाये ।

5. कल्याण गोत्र:-गद्दी उदयपुर, धर्मक्षत्रिय कालखा, कुटेल बुच्वी, मैहम्द्पुर, शेखपुरा, भादड़, दिवालहेड़ी, सिद्दपुरा बकड़ोली, बहलोलपुर, में आबाद हो गये । धर्म कंवर जिनके बारह बेटे हुये। उनका बड़ा लड़का बैरीसाल था । बैरीसाल की सन्तान कल्याण गोत्र के रोड़ हुये । इनके दूसरे भाई सोमपाल की सन्तान राजपूत हुये । शेष दश भाइयों की सन्तान गढवाल गोत्र के जाट कहलाये ।

6. थौल्ला गोत्र :-गद्दी उदयपुर,धर्मक्षत्रि ये ज्ञाना माजरा,बेलड़ा भोजपुर, रहमतपुर, बाल रांगड़ान, करनाल सोहलपुर में आबाद हुये । बला सिंह का पुत्र थौल्ला था । जिनका निकास बादली से है । इनके नाम के पिछे ही रोड़ो का थौल्ला गोत्र कहलाया।

7. घड़ताण गोत्र:-गद्दी हरिणा, धर्मक्षत्रिय, बादली से बसताड़ा ऊटंला, अलुपुर, लाखनौर, चौरा, फत्तेपुर खेड़ी मटखा, बेलड़ा में आबाद हो गये । बादली से जगमाल यिंह के पुत्र गुरजन के नाम से रोड़ों का गोत्र घड़ताण कहलाया गया ।

8. कलंतगड़िया गोत्र:-गद्दी उदयपुर, धर्मक्षत्रिय, दिल्ली से बादली से कालरम, बन्दराणा, जुण्डला, शाहपुर, सांच राजौद, पाण्डोखेड़ी, कुटेल, करनाल, जैदपुरा में आबाद हो गये । कालू सिंह दिल्ली से उठ कर बादली में आबाद हो गये । कालू सिंह के नाम से रोड़ों का गोत्र कलंतगड़िया कहलाया गया । कालू सिंह के एक भाई जारत जो राजली गुरानें बैठे जिनकी सन्तान जाट तंवर कहलाये ।

9. भूकना गोत्र:-गद्दी उदयपुर, धम क्षत्रिय, जैसलमेर से बादली से कतलाहड़ी, माणक माजरा, बजीदा, पबनावा,अरजाहेड़ी कत्तेपुर में आबाद हो गये । सोहल सिंह रोड़ जैसलमेर से उठकर बादली में आबाद हो गये । सोहल सिंह का बेटा भीकन था । भीकन के नाम से रोड़ों का गोत्र भूकना कहलाया गया ।

10. तुर्का गोत्र :-गद्दी हरिणा-धर्म क्षत्रिय, बादली राज्य से सनेहड़ी,शाखपुर, सलारपुर, शामगढ़ में आबाद हो गये । साधु सिंह के दो बेटे बीरभान और कलयान राय हुये । बीरभान की सन्तान गांव पंजोखरा जिला अम्बाला में तुरके जाट आबाद है । कलयान राय रोड़ के पुत्र तारा चन्द के नाम से रोड़ों का तुर्का गोत्र बना ।

11. नौसराण गोत्र :-गद्दी उदयपुर, धर्म क्षत्रिय, जैसलमेर से बहादुरगढ़ से बादली राज्य से भरटोली, कुराना, पन्नोड़ी में आबाद हो गये। हरसराम जी का बेटा नौसर हुआ । नौसर के नाम सें रोड़ों का नौसराण गोत्र हुआ ।

12. जांडसलार गोत्र:-गद्दी उदयपुर -धर्म क्षत्रिय ,जैसलमेर से लखीवाल से बादली राज्य से सीकरी,ढाचर,हथलाणा, काछवा, दादुपुर, नगंला, सिद्दपुर, में आबाद हो गये । जय सिंह के बेटे झंडू सिंह के नाम पर जांडसलार गोत्र हुआ ।

13. भुराण गोत्र:- गद्दी हरिणा-धर्म क्षत्रिय दिल्ली गढ से सैंथली से बादली राज्य से समाणी में आबाद हो गये । सहमल रोड़ के

तीन बेटे भूरा, बिन्तु, जोन्जा हुये । सहमल रोड़ के पुत्र भूरा के नाम से रोड़ों का भूराण गोत्र हुआ । सहमल का दुसरा पुत्र विनान में बैठा जिनकी सन्तान का विनान गोत्र जाटों का हुआ। सहमल का तीसरा बेटा जोन्जा गांव झाझन बैठा जिनकी सन्तान झांझन गोत्र के जाट हुये ।

14. धनयाण गोत्र :-गद्दी गाईपत्य- धर्म क्षत्रिय गढ़ दिल्ली से बादली राज्य से अन्जनथली, उजारा, प्योंत, खण्डरा में आबाद हो गये । देवपाल रोड़ गढ़ दिल्ली से चलकर बादली में आबाद हो गये । इनके बारह लड़के थे । जिनमें से ग्यारह भाई तो जाटों में जा मिले । जिनके घनघस गोत्र के जाट हुयै । इनके बारहवें बेटें घन्नू के नाम से धन्याण गोत्र रोड़ों का हुआ ।

15. मछराण गोत्रः-गद्दी गाईपत्य- धर्म क्षत्रिय, जैसलमेर से बादली राज्य से दादपुर, गन्याणा, कुछपुरा, निसंग, मंजूरा में आबाद हो गये । बादली से माधू के बेटे माच्छू से मछराण गोत्र के रोड़ हुये।

16. हुरड़ा गोत्रः-गददी हरिणा-धर्म क्षत्रिय, जैसलमेर से बादली राज्य से निसंग, भरटौली, कुवांर खेड़ी बसताड़ा,कुवां खेड़ा मिर्जापुर मकड़ोली, करनाल में आबाद हो गये । राजा कीरत सिंह का बेटा हुरट हुआ । हुरट के नाम से ही हुरड़ा गोंत्र के रोड़ हुये ।

17. सुरहा गोत्रः- गद्दी हरिणा-धर्म क्षत्रिय बादली राज्य से कुराना, फरीदपुर, जाम्बा में आबाद हो गये । श्री पाल से ही रोड़ों का सुरहा गोत्र हुआ ।

18. रोजड़ा गोत्रः-गद्दी हरिणा-धर्म क्षत्रिय गढ़ दिल्ली से बादली राज्य से ज्याणी लुहारी, राहड़ा, कुंजपुरा, नानूखेड़ी, सटोंण्डी, नागल, में आबाद हो गये । छींके का बेटा राझड़ देव जिसके नाम से रोड़ों का रोजड़ा गोत्र हुआ ।

19. गराक गोत्रः-गद्दी हरिणा-धर्म क्षत्रिय, गढ़ दिल्ली से बादली राज्य से मथाना,गुल्लरपुर, राहड़ा, बाकल, बलड़ी, में आबद हो गये । गोरी सिंह के नाम से गराक गोत्र के रोड़ हुये ।

20. गोल्हण गोत्र :-गद्दी पंजाब धर्म क्षत्रिय, बादली राज्य से गुलयाना से पुण्डरी, ललायण, सुलतानपुर,धथेड़ा,ढाबर थला, भैणी, मुस्तापुर, तिगरी,ढीग, घेरडू में आबाद हो गये । लखनपाल रोड़ ने बादली से चलकर गुलयाना गांव बसाया ।गुलयाना गांव से निकास होनें के कारण गोल्हण गोत्र कहलाया ।

21. छकडान गोत्रः-गद्दी हरिणा-धर्म क्षत्रिय, जैसलमेर से बादली राज्य से ज्ञाना माजरा, ढाठरथ, हाट मलार में आबाद हुये । जसलमेर के नन्द पाल के बेटे छन्दा के नाम से छकडान गोत्र के रोड हुये ।

22. खोखरा गोत्रः-गद्दी हरिणा,धर्म क्षत्रिय, गढ़ गजनी शहर से बादली राज्य से भादड़, नली, बेलड़ा, दिवालहेड़ी, झंझाड़ी खालदपुर,डालूवाला, में आबाद हो गये। केशो राम के बारह बेटे हुये । केशो के बड़े बेटे प्रमे सिंह की सन्तान खोखरा गोत्र के रोड़ हुये । केशो के दूसरे बेटे पूरे की सन्तान खोखरे गोत्र के जाट हुये । केशो के शेष दश बेटों की सन्तान खोखरा राजपूत हुये ।

23. जूड गोत्रः- गद्दी उदयपुर धर्म क्षत्रिय,गढ़ दिल्ली से बादली राज्य से मुन्दड़ी, पाई, कलहेडी, बेलड़ा, पिचोलियै, में आबाद हुऐ । गढ दिल्ली से जगमल के बेटे जुड़मल के नाम से रोड़ों का जूड गोत्र हुआ ।

24. मोमण गोत्रः-गद्दी उदयपुर धर्म क्षत्रिय मुजफर नगर से फरीदपुर से बादली राज्य से कुंजपुरा, नागल, में आबाद हो गये। मुजफर नगर के मोम के नाम से रोड़ों का मोमण गोत्र हुआ

25. कादियाण गोत्र :-गद्दी उदयपुर धर्म क्षत्रिय, अजमेर से फागोट से चरखी दादरी से लुहारी, कुतुबगढ़, ज्ञाना माजरा, नर्कातारी,दुधली, न्योवला, ज्याणी, खानपुर, मंजूरा कतलाहड़ी में आबाद हो